वर्ष-1 , अंक-10 | बेंगलुरु, रविवार , 30 अगस्त 2026 | RNI NO:KNHIN/26/A5540 | Contact:news@bhaarataarth.com | पृष्ठ - 4 ,मूल्य - 5 रुपए

दैनिक समाचार पत्र

भारतार्थ खबर

ख़बर नहीं, उसका अर्थ

नेपाल में तबाही, विदेशी रेस्क्यू पर रोक

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

काठमांडू, 29 अगस्त 2026। नेपाल में 26 अगस्त को भोटे कोशी नदी क्षेत्र में आई भीषण फ्लैश फ्लड ने भारी तबाही मचाई है। बाढ़ से जान-माल के साथ सड़क, पुल, जलविद्युत परियोजनाओं और अन्य महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे को व्यापक नुकसान पहुंचा है। राहत और खोज-बचाव अभियान लगातार जारी है।

इस संकट के बीच भारत, चीन, अमेरिका, ब्रिटेन, जापान, दक्षिण कोरिया, श्रीलंका और बांग्लादेश समेत कई देशों ने नेपाल को खोज एवं बचाव दल उपलब्ध कराने की पेशकश की है। हालांकि नेपाल सरकार ने फिलहाल विदेशी रेस्क्यू टीमों की तैनाती को जरूरी नहीं माना है। काठमांडू का कहना है कि नेपाली सेना, नेपाल पुलिस, स्थानीय प्रशासन और आपदा प्रबंधन एजेंसियां बचाव एवं राहत कार्य में पूरी तरह जुटी हैं। 538 शव बरामद, 511 विदेशी अब भी लापता

नेपाल के विदेश मंत्रालय के 28 अगस्त के आधिकारिक अपडेट के अनुसार, अब तक 538 शव बरामद किए जा चुके हैं। वहीं 33 देशों से संबंधित 632 लोगों की जानकारी में से 121 लोगों का पता लगाया जा चुका है, जबकि 511 लोग अभी भी लापता बताए गए हैं। मंत्रालय ने स्पष्ट किया है कि ये आंकड़े खोज एवं बचाव अभियान जारी रहने के कारण सत्यापन के अधीन हैं। विदेशी नागरिकों में भारतीय नागरिकों की संख्या भी उल्लेखनीय है। नेपाल के आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार 178 भारतीय नागरिकों की जानकारी दर्ज हुई थी, जिनमें 85 का पता लगाया जा चुका है और 93 अभी लापता बताए गए हैं।

नेपाल ने विदेशी सहायता पूरी तरह नहीं ठुकराई नेपाल का फैसला विदेशी सहायता को पूरी तरह अस्वीकार करने वाला नहीं है। सरकार ने कहा है कि वह जरूरत के अनुसार सहायता का आकलन कर रही है और विशिष्ट आवश्यकताओं की जानकारी स्थापित आधिकारिक माध्यमों से साझा करेगी। राहत एवं बचाव के लिए आर्थिक योगदान की व्यवस्था भी की गई है। नेपाल के विदेश मंत्रालय ने विदेशी नागरिकों से संबंधित मामलों के समन्वय, सूचना सत्यापन और कांसुलर सहायता के लिए एक आपातकालीन नियंत्रण कक्ष भी स्थापित किया है। मंत्रालय ने लोगों से अपुष्ट सूचनाएं प्रसारित न करने और आधिकारिक माध्यमों से जानकारी लेने की अपील की है। भारत की मदद की पेशकश

भारत ने भी नेपाल को राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (ठऊफऋ) की सहायता उपलब्ध कराने की पेशकश की है। हालांकि फिलहाल नेपाल ने विदेशी खोज एवं बचाव दलों की आवश्यकता नहीं बताई है। भारत सहित अन्य देशों की ओर से राहत सहायता और सहयोग की पेशकश के बीच नेपाल अपने उपलब्ध संसाधनों से अभियान चला रहा है। 2015 के अनुभव से लिया सबक

नेपाल में विदेशी बचाव दलों की तैनाती का सवाल 2015 के विनाशकारी भूकंप के अनुभव से भी जुड़ा है। उस आपदा के दौरान बड़ी संख्या में अंतरराष्ट्रीय खोज एवं बचाव दल नेपाल पहुंचे थे। ऐसे बड़े अंतरराष्ट्रीय अभियानों में समन्वय, लॉजिस्टिक्स और संसाधनों के प्रबंधन की चुनौतियां सामने आई थीं। इस बार नेपाल ने शुरूआती चरण में अपनी सेना, पुलिस, स्थानीय प्रशासन और आपदा प्रबंधन तंत्र को प्राथमिक जिम्मेदारी दी है। हालांकि परिस्थितियों के बदलने पर सरकार जरूरत के अनुसार अंतरराष्ट्रीय सहायता का आकलन कर सकती है।

बचाव अभियान के सामने बड़ी चुनौती दुर्गम पहाड़ी इलाकों में पहुंच, क्षतिग्रस्त सड़कों और पुलों के कारण राहत कार्य चुनौतीपूर्ण बना हुआ है। मलबे में फंसे लोगों की तलाश, लापता नागरिकों की पहचान और प्रभावित क्षेत्रों तक राहत सामग्री पहुंचाना प्रशासन के लिए बड़ी चुनौती है।

नेपाल सरकार ने नदी तंत्र और निचले इलाकों में बाढ़ के जोखिम पर भी लगातार निगरानी रखने की बात कही है। संपादकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण संदेश नेपाल का विदेशी रेस्क्यू टीमों को फिलहाल अनुमति न देना उसकी आपदा प्रबंधन क्षमता और राष्ट्रीय स्तर पर अभियान संचालित करने के निर्णय को दशार्ता है। लेकिन इतनी बड़ी मानवीय त्रासदी में अंतरराष्ट्रीय सहयोग की भूमिका भी महत्वपूर्ण बनी हुई है। सबसे जरूरी बात यह है कि राहत और बचाव को राजनीतिक या कूटनीतिक नजरिए से नहीं, बल्कि मानवीय आवश्यकता और जमीनी स्थिति के आधार पर देखा जाए। यदि आने वाले समय में नेपाल की एजेंसियों को अतिरिक्त विशेषज्ञता, उपकरण या मानव संसाधन की आवश्यकता महसूस होती है, तो अंतरराष्ट्रीय सहायता का उपयोग प्रभावित लोगों तक राहत पहुंचाने में महत्वपूर्ण साबित हो सकता है। नेपाल में राहत एवं खोज-बचाव अभियान जारी है। मृतकों और लापता लोगों की संख्या में बदलाव संभव है, इसलिए आगे के अपडेट में नेपाल सरकार के नवीनतम आधिकारिक आंकड़ों को ही प्राथमिकता देना आवश्यक होगा।

पीएम मोदी को छात्राओं ने बांधी राखी

रक्षाबंधन पर प्रधानमंत्री आवास में दिखा आत्मीय माहौल, छात्राओं से मोदी ने किया सहज संवाद

भारतार्थ खबर संवाददाता अशोक कुमार सिंह भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

नई दिल्ली, 29 अगस्त 2026। रक्षाबंधन के पावन पर्व पर प्रधानमंत्री आवास में शनिवार को आत्मीय और उत्साहपूर्ण माहौल देखने को मिला। बड़ी संख्या में स्कूली छात्राओं ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की और उनकी कलाई पर राखी बांधी।

राखी बांधने के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने छात्राओं से सहजता से बातचीत की और उनके साथ खुशियों के पल साझा किए। प्रधानमंत्री ने बच्चों का उत्साह बढ़ाते हुए उनसे संवाद किया और हाई-फाइव भी किया। मुलाकात के दौरान छात्राएं भी काफी उत्साहित नजर आईं। प्रधानमंत्री आवास पर हुए इस कार्यक्रम की तस्वीरों में प्रधानमंत्री मोदी छात्राओं के बीच मुस्कुराते और उनसे बातचीत करते दिखाई दिए।

रक्षाबंधन भारतीय संस्कृति में भाई-बहन के प्रेम, विश्वास और स्नेह का प्रतीक माना जाता है। इस अवसर पर छात्राओं द्वारा प्रधानमंत्री को राखी बांधने से कार्यक्रम में पारिवारिक और आत्मीय भावनाओं का वातावरण दिखाई दिया। प्रधानमंत्री के साथ छात्राओं की यह मुलाकात रक्षाबंधन के अवसर पर आयोजित एक विशेष संवाद के रूप में सामने आई, जिसमें बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

नेपाल में फिर सैलाब का खतरा : भोटेकोशी–त्रिशूली क्षेत्र में हाई अलर्ट, राहत अभियान के बीच प्रशासन ने बढ़ाई सतर्कता

भारतार्थ खबर संवाददाता अशोक कुमार सिंह
Bhaarataarth.com

काठमांडू, 29 अगस्त 2026। नेपाल में 26 अगस्त को आई विनाशकारी फ्लैश फ्लड से हुई भारी तबाही के बीच अब संभावित नए सैलाब का खतरा चिंता बढ़ा रहा है। भोटेकोशी नदी क्षेत्र और आसपास के इलाकों में जलस्तर तथा डाउनस्ट्रीम बाढ़ के जोखिम पर लगातार निगरानी रखी जा रही है। प्रशासन ने संवेदनशील क्षेत्रों में लोगों और राहत-बचाव दलों को सतर्क रहने तथा आवश्यकता पड़ने पर सुरक्षित स्थानों की ओर जाने की सलाह दी है।

538 शव बरामद, 977 लोग लापता नेपाल के विदेश मंत्रालय द्वारा 28 अगस्त को जारी आधिकारिक अपडेट के अनुसार भोटेकोशी नदी क्षेत्र से अब तक 538 शव बरामद किए जा चुके हैं। वहीं बड़ी संख्या में स्थानीय लोगों और पर्यटकों के अब भी लापता होने की सूचना है। राष्ट्रीय आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन प्राधिकरण के आंकड़ों के अनुसार 977 लोग लापता बताए गए हैं। राहत और खोज-बचाव अभियान जारी रहने के कारण आंकड़ों में बदलाव संभव है।

नेपाल के अधिकारियों के सामने इस समय दोहरी चुनौती है–एक तरफ मलबे और दुर्गम इलाकों में लापता लोगों की तलाश तथा दूसरी ओर संभावित नए जलप्रवाह से प्रभावित आबादी को सुरक्षित

रखना।

तिब्बत क्षेत्र में जलभराव से बढ़ी चिंता नेपाल-तिब्बत सीमा क्षेत्र में ग्लेशियर से जुड़ी घटनाओं और मलबे के कारण बने अस्थायी जल-अवरोधों से बाढ़ का जोखिम बढ़ने की आशंका जताई गई है। विशेषज्ञों और अधिकारियों की चिंता मुख्य रूप से ऐसे जलस्रोतों को लेकर है, जिनमें अचानक पानी बढ़ने या अवरोध टूटने की स्थिति में नीचे की ओर तेज जलप्रवाह आ सकता है। इसी कारण भोटेकोशी समेत संबंधित नदी तंत्र और निचले इलाकों पर लगातार निगरानी रखी जा रही है। हालांकि किसी नए जल-अवरोध के टूटने संबंधी हर सूचना की आधिकारिक पुष्टि आवश्यक है। इसलिए अपुष्ट खबरों के आधार पर लोगों में भय फैलाने से बचना जरूरी है।

बचाव अभियान के बीच नई चुनौती भीषण बाढ़ ने सड़क, पुल, जलविद्युत परियोजनाओं और अन्य महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे को भारी नुकसान पहुंचाया है। कई क्षेत्रों में पहुंच मार्ग बाधित होने के कारण राहत एवं बचाव कार्य कठिन बना हुआ है। नेपाल की सुरक्षा एजेंसियां, स्थानीय प्रशासन और स्वास्थ्य सेवाएं खोज-बचाव, निकासी, चिकित्सा सहायता और राहत कार्यों में जुटी हैं। बाढ़ के बाद नदी में मलबे और जलस्तर से जुड़े जोखिम के कारण बचाव दलों को भी अत्यधिक सावधानी बरतनी पड़ रही है। नए खतरे की आशंका होने पर अभियान को अस्थायी रूप से सुरक्षित स्थानों से संचालित करना भी जरूरी हो सकता है।

भारतीय नागरिकों की तलाश भी जारी नेपाल के विदेश मंत्रालय के 28 अगस्त के आंकड़ों में 178 भारतीय नागरिकों की जानकारी दर्ज थी। इनमें 85 लोगों का पता लगाया जा चुका था, जबकि 93 अभी भी लापता बताए गए थे। मंत्रालय ने विदेशी नागरिकों के आंकड़ों को सत्यापन के अधीन बताया है।

इसलिए भारतीय नागरिकों से जुड़े आंकड़ों को भी आधिकारिक अपडेट के अनुसार ही प्रकाशित करना आवश्यक है, क्योंकि राहत और खोज अभियान के साथ संख्या लगातार बदल सकती है। नेपाल के सामने राहत से बड़ी चुनौती अब सुरक्षा की

नेपाल में आई यह आपदा केवल बाढ़ तक सीमित नहीं रही। ग्लेशियर, मलबा, नदी में अचानक बढ़ता जलप्रवाह और पहाड़ी भूगोल ने राहत अभियान को बेहद चुनौतीपूर्ण बना दिया है। अब प्रशासन को यह सुनिश्चित करना होगा कि लापता लोगों की तलाश के साथ बचाव दल और प्रभावित आबादी किसी नए सैलाब की चपेट में न आए। स्थिति को देखते हुए नदी किनारे और संवेदनशील क्षेत्रों में सतर्कता, समय पर चेतावनी और सुरक्षित निकासी सबसे महत्वपूर्ण कदम हैं। नेपाल की आपदा प्रबंधन एजेंसियां नदी तंत्र और डाउनस्ट्रीम बाढ़ जोखिम की लगातार निगरानी कर रही हैं।

मोदी उज्बेकिस्तान रवाना, रउड में आतंकवाद पर रहेगा फोकस

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

नई दिल्ली, 29 अगस्त 2026। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शनिवार को मध्य एशिया के दौरे पर उज्बेकिस्तान के लिए रवाना हुए। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार वह 29 से 30 अगस्त तक उज्बेकिस्तान में रहेंगे। इसके बाद प्रधानमंत्री किर्गिस्तान की राजधानी बिश्केक में 30 अगस्त से 1 सितंबर तक आयोजित होने वाले शंघाई सहयोग संगठन (रउड) के शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे।

भारत से रवाना होने से पहले प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि वह रउड के प्रति भारत के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने और आतंकवाद, अलगाववाद तथा उग्रवाद से मुक्त क्षेत्र के निर्माण के लिए सदस्य देशों के साथ मिलकर काम करने के इच्छुक हैं। उज्बेकिस्तान के राष्ट्रपति से करेंगे वार्ता

प्रधानमंत्री मोदी उज्बेकिस्तान के राष्ट्रपति शौकत मिर्जियोयेव के निमंत्रण पर ताशकंद पहुंचेंगे। दोनों नेताओं के बीच व्यापार एवं निवेश, डिजिटल संपर्क, रक्षा और ऊर्जा सहित विभिन्न क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग को मजबूत करने के उपायों पर चर्चा होने की उम्मीद है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि हाल के वर्षों में भारत और उज्बेकिस्तान के बीच रणनीतिक साझेदारी में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। उन्होंने विश्वास जताया कि उनकी यात्रा मध्य एशिया के साथ भारत की रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करेगी तथा दोनों पक्षों के सभ्यतागत और लोगों के बीच संबंधों को गहरा करने में मदद करेगी।

शांति और स्थिरता पर जोर

प्रधानमंत्री ने अपनी यात्रा को शांति, स्थिरता और समृद्धि के साझा प्रयासों को आगे बढ़ाने वाला बताया। उन्होंने कहा कि भारत 2017 से रउड का सक्रिय और रचनात्मक सदस्य रहा है। मोदी ने सुरक्षा, संपर्क और अवसर पर आधारित क्षेत्र के लिए भारत के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता जताई। उन्होंने आतंकवाद, अलगाववाद और उग्रवाद को क्षेत्रीय तथा वैश्विक शांति और स्थिरता के लिए लगातार चुनौती बताया।

बिश्केक में रउड शिखर सम्मेलन

ताशकंद के बाद प्रधानमंत्री मोदी किर्गिस्तान के राष्ट्रपति सदिर जापारोव के निमंत्रण पर बिश्केक जाएंगे। वहां वह 26वें रउड शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेंगे। यह सम्मेलन संगठन की स्थापना के 25 वर्ष पूरे होने के अवसर पर आयोजित किया जा रहा है। प्रधानमंत्री सम्मेलन में सुरक्षा, संपर्क और अवसर से जुड़ी भारत की प्राथमिकताओं को रेखांकित कर सकते हैं। सम्मेलन से इतर उनके रउड सदस्य देशों के नेताओं के साथ द्विपक्षीय मुलाकातें करने की भी संभावना है।

प्रधानमंत्री मोदी बिश्केक में छठे ह्यवर्ल्ड नोमैड गेम्सह्न के उद्घाटन समारोह में भी शामिल होंगे। इसके अलावा ताशकंद में वह शास्त्री स्मारक और ताशकंद स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ ओरियंटल स्टडीज स्थित महात्मा गांधी केंद्र का दौरा करेंगे। इन कार्यक्रमों के माध्यम से भारत और मध्य एशिया के बीच ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संबंधों को भी रेखांकित किया जाएगा।

भव्य कलश यात्रा से भागवत कथा और नानी बाई का मायरा शुरू

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 29 अगस्त 2026। राजपूत समाज (कर्नाटक), बेंगलुरु के तत्वावधान में श्रीमद्भागवत कथा, ज्ञान एवं नानी बाई का मायरा का धार्मिक आयोजन भव्य कलश यात्रा के साथ शुरू हुआ। 26 अगस्त से 10 सितंबर 2026 तक चलने वाले इस आयोजन के शुभारंभ अवसर पर बड़ी संख्या में समाजबंधुओं, महिलाओं एवं श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

कलश यात्रा के दौरान महिलाओं ने पारंपरिक वेशभूषा में सिर पर कलश धारण कर श्रद्धा के साथ सहभागिता की। भक्ति गीतों, भजनों और भगवान के जयघोष से वातावरण भक्तिमय हो गया। श्रद्धालुओं ने भगवान श्रीकृष्ण एवं श्रीमद्भागवत के प्रति अपनी आस्था प्रकट करते हुए धार्मिक जयकारे लगाए। 15 दिनों तक होगा श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन

आयोजकों के अनुसार श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन 26 अगस्त से 10 सितंबर 2026 तक प्रतिदिन दोपहर 3 से शाम 5 बजे तक किया जा रहा है। कथा का वाचन पुष्कर धाम के परम पूज्य संत श्री राजारामजी महाराज द्वारा किया जा रहा है। कथा वाचन के दौरान श्रीमद्भागवत के विभिन्न प्रसंगों, भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं तथा धर्म, संस्कार, भक्ति और सदाचार के महत्व पर प्रकाश डाला जाएगा।

आयोजकों ने बताया कि भागवत कथा के माध्यम से श्रद्धालुओं को धार्मिक संदेशों के साथ उन्हें दैनिक जीवन में अपनाने की प्रेरणा भी मिलेगी।

नानी बाई का मायरा रहेगा प्रमुख आकर्षण धार्मिक आयोजन में नानी बाई का मायरा भी विशेष आकर्षण रहेगा। मायरे की कथा के माध्यम से भाई-बहन के प्रेम, पारिवारिक संस्कार, भक्ति, विश्वास और भगवान के प्रति अटूट श्रद्धा जैसे भावों को प्रस्तुत किया जाएगा।

आयोजकों के अनुसार धार्मिक एवं आध्यात्मिक कार्यक्रमों का उद्देश्य समाज में संस्कार, धार्मिक चेतना, एकता और आपसी भाईचारे को मजबूत करना है। साथ ही बच्चों और युवा पीढ़ी को भारतीय धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। चामुंडा माता मंदिर में आयोजन यह आयोजन चामुंडा माता मंदिर, रणासिग पेट, कोटेनपेट, बेंगलुरुझ्र560053 में किया जा रहा है। राजपूत समाज (कर्नाटक), बेंगलुरु ने समाजबंधुओं एवं श्रद्धालुओं से परिवार सहित कथा स्थल पर पहुंचकर कथा श्रवण एवं संत श्री राजारामजी महाराज के प्रवचनों का लाभ लेने का आह्वान किया है।

ऑनलाइन भी उपलब्ध होगी कथा जो श्रद्धालु किसी कारणवश कथा स्थल पर उपस्थित नहीं हो सकते, वे ह्यतीर्थ गुरुवाणीह्न ङ्म४ळ४ुी चैनल के माध्यम से कथा से जुड़ सकते हैं। इससे देश-विदेश में रहने वाले श्रद्धालुओं को भी धार्मिक आयोजन का लाभ लेने का अवसर मिलेगा।

आयोजकों के अनुसार यह आयोजन धार्मिक एवं आध्यात्मिक चेतना के साथ समाज में एकता, संस्कार और भाईचारे को बढ़ावा देने का माध्यम बनेगा। समाचार प्रेषकः दलपतसिंह भायल

अलगर कोविल से 30 अगस्त को निकलेगी भव्य कावड़ यात्रा

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

मदुरै, 29 अगस्त 2026। भगवान भोलेनाथ की भक्ति और आस्था को समर्पित भव्य कावड़ यात्रा का आयोजन 30 अगस्त 2026, रविवार को किया जाएगा। श्रद्धालु कावड़ लेकर अलगर कोविल से मदुरै स्थित इननन्मै थरुवर शिवन मंदिर तक यात्रा करेंगे और भगवान महादेव का जलाभिषेक एवं पूजा-अर्चना करेंगे। प्रवासी समाज के प्रवक्ता दिनेश सालेचा ने बताया कि कावड़ यात्रा का प्रस्थान 30 अगस्त की मध्यरात्रि 12 बजे अलगर कोविल से होगा। यात्रा विभिन्न मार्गों से होते हुए मदुरै स्थित इननन्मै थरुवर शिवन मंदिर पहुंचेगी, जहां धार्मिक अनुष्ठानों के साथ यात्रा का समापन होगा। यात्रा में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के शामिल होने की संभावना है। भक्तजन कावड़ लेकर भगवान शिव की आराधना करते हुए आगे बढ़ेंगे। यात्रा के दौरान ह्यहर हर महादेवह्न के जयघोष से वातावरण भक्तिमय रहेगा। आयोजकों ने श्रद्धालुओं से निर्धारित समय पर पहुंचने तथा यात्रा के दौरान अनुशासन, श्रद्धा और आपसी सहयोग बनाए रखने की अपील की है। आयोजन का उद्देश्य भगवान महादेव के प्रति आस्था व्यक्त करने के साथ श्रद्धालुओं को भक्ति, सेवा और धार्मिक भावना से जोड़ना है। कावड़ यात्रा के समापन पर श्रद्धालु शिव मंदिर में भगवान महादेव का जलाभिषेक एवं पूजा-अर्चना कर मंगलकामना करेंगे। समाचार प्रेषकः दिनेश सालेचा, मदुरै

सम्पादकीय

रास्ते का पत्थर और किसान की मेहनत ने बदल दी किस्मत

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

जीवन में आने वाली कठिनाइयां अक्सर हमें रोकने के लिए नहीं, बल्कि हमारी क्षमता और धैर्य को परखने के लिए आती हैं। जो व्यक्ति परेशानियों को देखकर रास्ता बदल लेता है, वह अपने लक्ष्य से दूर हो सकता है। इसके विपरीत जो व्यक्ति हिम्मत, मेहनत और सकारात्मक सोच के साथ बाधाओं का सामना करता है, सफलता अंततः उसके कदम चूमती है। एक समय की बात है। एक राजा ने अपनी प्रजा की सोच और व्यवहार को परखने के लिए एक अनोखी योजना बनाई। उसने सड़क के बीचों-बीच एक भारी पत्थर रखवा दिया और स्वयं पास के एक पेड़ के पीछे छिपकर लोगों की गतिविधियां देखने लगा। कुछ समय बाद राजा के दरबारी वहां से गुजरे। उन्होंने सड़क पर पड़े बड़े पत्थर को देखा, लेकिन किसी ने उसे हटाने की कोशिश नहीं की। वे पत्थर को रास्ते की समस्या मानकर आगे बढ़ गए। इसके बाद कई अन्य लोग भी वहां से गुजरे। किसी ने पत्थर को हटाने के बजाय उसे देखकर रास्ता बदल लिया या किसी तरह उसके किनारे से निकल गया। काफी समय बीतने के बाद एक गरीब किसान वहां पहुंचा। उसके हाथों में सब्जियों की टोकरी और खेती-बाड़ी के कुछ औजार थे। रास्ते में पड़े पत्थर को देखकर वह रुक गया। उसने सोचा कि यदि यह पत्थर सड़क पर पड़ा रहा तो किसी राहगीर को चोट लग सकती है और आने-जाने में भी परेशानी होगी। किसान ने अपने सामान को एक ओर रखा और पत्थर हटाने में जुट गया। पत्थर काफी भारी था, इसलिए उसे हटाना आसान नहीं था। किसान ने कई बार प्रयास किया, अपनी पूरी ताकत लगाई और अंततः उसकी मेहनत रंग लाई। उसने पत्थर को सड़क से हटा दिया। पत्थर हटाते ही किसान की नजर जमीन पर पड़े एक थैले पर गई। थैले में सोने के सिक्के और कुछ मूल्यवान आभूषण थे। साथ ही उसमें राजा का लिखा हुआ एक पत्र भी रखा था। पत्र में लिखा था कि यह धन उस व्यक्ति के लिए पुरस्कार है, जिसने दूसरों की परेशानी को अपनी समस्या समझकर उसे दूर करने का प्रयास किया। किसान की मेहनत, ईमानदारी, जिम्मेदारी और अच्छे स्वभाव ने उसे यह सम्मान दिलाया था।

राजा ने दूर से यह पूरा दृश्य देखा और समझ गया कि उसकी प्रजा में अभी भी ऐसे लोग मौजूद हैं जो केवल शिकायत नहीं करते, बल्कि समस्या का समाधान करने के लिए आगे बढ़ते हैं। प्रेरक संदेश

हमारे जीवन में भी अनेक बार ऐसे ह्यपत्थरह्ल आते हैं, जो हमारे रास्ते में बाधा बनते हैं। कभी आर्थिक परेशानी, कभी असफलता, कभी परिस्थितियां और कभी लोगों की नकारात्मक बातें हमें रोकने का प्रयास करती हैं। लेकिन कठिनाई को देखकर पीछे हट जाना समाधान नहीं है। यदि हम धैर्य रखें, मेहनत करें और समस्या का सामना करने का साहस रखें, तो वही बाधा हमारे लिए सफलता का रास्ता खोल सकती है। इसलिए जीवन में आने वाली कठिनाइयों से घबराएं नहीं। उन्हें चुनौती समझकर आगे बढ़ें, क्योंकि कई बार सफलता उसी बाधा के पीछे छिपी होती है जिसे हम रास्ते का पत्थर समझ रहे होते हैं।

जब शांत कोशी ने दिखाया अपना रौद्र रूप, हिमालय ने सिखाया जीवन का बड़ा सबक

यात्रा-वृतांत एवं प्रेरक प्रसंग

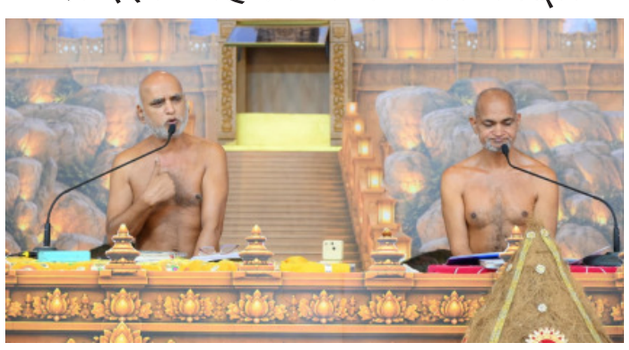

कभी-कभी जीवन में देखी गई कोई छोटी-सी घटना वर्षों बाद हमारे सामने एक बड़े संदेश के रूप में लौटती है। प्रकृति भी अपने इसी अंदाज में इंसान को उसकी सीमाओं का एहसास कराती है। हिमालय की गोद में बहने वाली नदियां जहां एक ओर जीवन, सौंदर्य और शांति का प्रतीक हैं, वहीं दूसरी ओर उनका रौद्र रूप मनुष्य को यह समझाने के लिए काफी है कि प्रकृति से बड़ा कोई नहीं।

वर्ष 2018 में कैलाश पर्वत-मानसरोवर यात्रा के दौरान श्रीयुत नरपत पटेल और परोपकारम परिवार के अन्य सदस्यों के साथ नेपाल-तिब्बत सीमा के निकट एक स्थान पर ठहरने का अवसर मिला था। हिमालय की तलहटी में बसा वह क्षेत्र आज भी स्मृतियों में उसी तरह जीवंत है—पहाड़ियों के बीच से गुजरती सड़कें, आसपास बने छोटे-छोटे घर, यात्रियों से भरा वातावरण और शांत गति से बहती कोशी नदी।

उस समय कोशी नदी को देखकर मन में केवल सुंदरता और शांति का भाव पैदा होता था। नदी के किनारे खड़े होकर उसके निर्मल प्रवाह को निहारना किसी ध्यान-साधना से कम नहीं था। लगता था जैसे हिमालय की विशालता और नदी की शांति मिलकर जीवन को ठहरकर देखने का संदेश दे रही हों।

लेकिन समय हमेशा एक जैसा नहीं रहता।

आज उसी क्षेत्र में आई भीषण बाढ़ की खबरों और तस्वीरों ने वर्षों पुरानी उस यात्रा की स्मृतियों को फिर जीवित कर दिया है। नेपाल-तिब्बत सीमा क्षेत्र में बाढ़ और तेज जलप्रवाह से सड़क, पुल, मकान और अन्य संरचनाओं को नुकसान पहुंचने की खबरें सामने आई हैं। कैलाश-मानसरोवर यात्रा पर गए कुछ तीर्थयात्रियों से संपर्क नहीं हो पाने की खबरों ने चिंता भी बढ़ा दी है।

जिस स्थान को कभी शांत और सुंदर देखा था, उसकी बदली हुई तस्वीर मन को विचलित कर देती है।

प्रकृति का यही सबसे बड़ा रहस्य है। नदी जब अपनी सामान्य धारा में बहती है तो जीवन देती है, खेतों को सींचती है और मन को शांति प्रदान करती है। लेकिन जब जलप्रवाह अपनी सीमा तोड़ देता है तो इंसान की बनाई सीमाएं, सड़कें और मजबूत समझी जाने वाली संरचनाएं भी उसके सामने कमजोर पड़ जाती हैं।

हिमालय की यह घटना हमें केवल प्राकृतिक आपदा का भय नहीं दिखाती, बल्कि जीवन का एक गहरा दर्शन भी समझाती है।

मनुष्य अपने ज्ञान, विज्ञान, तकनीक और आर्थिक उपलब्धियों पर गर्व कर सकता है। वह ऊंची इमारतें बना सकता है, कठिन पहाड़ों तक पहुंच सकता है और प्रकृति के रहस्यों को समझने के लिए आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल कर सकता है। लेकिन प्रकृति के सामने उसकी शक्ति आज भी सीमित है।

कैलाश-मानसरोवर की यात्रा का महत्व भी शायद इसी अनुभव में छिपा है। वहां पहुंचकर मनुष्य हिमालय की ऊंचाई को देखता है तो उसे अपनी विशाल समझी जाने वाली दुनिया कितनी छोटी दिखाई देती है। मानसरोवर की शांति मन को भीतर झांकने के लिए प्रेरित करती है और कैलाश की विराटता अहंकार को विनम्रता में बदलने का संदेश देती है।

वर्षों पहले जिस कोशी नदी के किनारे खड़े होकर उसकी सुंदरता देखी थी, आज उसी क्षेत्र में प्रकृति की ताकत का दूसरा रूप दिखाई दे रहा है। यह स्मृति मन में एक प्रश्न छोड़ जाती है—यदि हमारे सामने कल की सुरक्षित और सुंदर दुनिया आज अचानक बदल सकती है, तो फिर मनुष्य अपने जीवन को स्थायी मानकर इतना अहंकार क्यों करता है?

जीवन वास्तव में बहुत क्षणभंगुर है। हमारे पास जो समय है, जो संबंध हैं, जो अवसर हैं और जो सांसें हमें मिली हैं, उनके लिए हमें कृतज्ञ होना चाहिए। प्रकृति हमें हर पल यह अवसर देती है कि हम उसके साथ संतुलन बनाकर जीवन जिएं।

विकास आवश्यक है, लेकिन ऐसा विकास जो पहाड़ों, नदियों और जंगलों की कीमत पर न हो। पहाड़ी क्षेत्रों में निर्माण, पर्यटन और यात्राओं के दौरान पर्यावरणीय संतुलन का ध्यान रखना आज पहले से कहीं अधिक जरूरी है। प्रकृति को जीतने की मानसिकता के बजाय उसके साथ सामंजस्य स्थापित करने की सोच ही भविष्य का सुरक्षित रास्ता हो सकती है।

कैलाश की यात्रा केवल एक भौगोलिक यात्रा नहीं है। यह मनुष्य को भीतर से बदलने वाली आध्यात्मिक यात्रा भी है। वहां पहुंचकर इंसान को महसूस होता है कि संसार में उसका अस्तित्व कितना छोटा है और प्रकृति की विराटता कितनी बड़ी।

आज कोशी की तेज धारा मानो यही संदेश दे रही है—

प्रकृति हमारे अधिकार में नहीं है, हम स्वयं प्रकृति के आश्रय में हैं।

इस प्राकृतिक आपदा के बीच सबसे जरूरी प्रार्थना उन सभी यात्रियों और स्थानीय लोगों की सुरक्षा के लिए है जो प्रभावित क्षेत्रों में फंसे हो सकते हैं। ईश्वर करे प्रत्येक तीर्थयात्री और प्रभावित परिवार सुरक्षित रहे तथा राहत और बचाव कार्य शीघ्र सफल हों। हिमालय हमें डराने नहीं, जगाने आया है। वह हमें सिखाता है कि जीवन को अहंकार से नहीं, विनम्रता से जीना चाहिए। नदियों का सम्मान करना चाहिए, पहाड़ों की रक्षा करनी चाहिए और जंगलों को आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखना चाहिए।

क्योंकि हमने प्रकृति को नहीं जीता है– हम स्वयं प्रकृति की कृपा से जीवित हैं।श्रीधर एन. एम., परोपकारम

कावेरी का पानी फिर बना सवाल, समाधान कब बनेगा स्थायी?

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

कावेरी नदी का पानी एक बार फिर कर्नाटक और तमिलनाडु के बीच राजनीतिक तथा भावनात्मक तनाव का कारण बन गया है। कावेरी जल प्रबंधन प्राधिकरण ने कावेरी जल विनियमन समिति की सिफारिश को बरकरार रखते हुए कर्नाटक को 15 दिनों तक तमिलनाडु के लिए 9,000 क्यूसेक पानी सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है। यह निर्णय ऐसे समय आया है जब वर्षा की कमी और जल-संकट ने कर्नाटक की चिंताओं को और गंभीर बना दिया है। कावेरी विवाद केवल पानी के बंटवारे का प्रशासनिक विषय नहीं है। इसके साथ किसानों की आजीविका, शहरों की पेयजल जरूरतें, क्षेत्रीय भावनाएं और दो राज्यों की राजनीति जुड़ी हुई है। यही कारण है कि हर बार जब नदी का प्रवाह कम होता है और पानी छोड़ने का निर्देश सामने आता है, तो विवाद अदालतों और जल प्राधिकरणों से निकलकर सड़कों और राजनीतिक मंचों तक पहुंच जाता है। सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या हर वर्ष इसी तरह टकराव की स्थिति पैदा होती रहनी चाहिए? कर्नाटक के लिए चुनौती इसलिए भी बड़ी है क्योंकि राज्य स्वयं वर्षा की कमी से जूझ रहा है। ताजा रिपोर्टों के अनुसार राज्य में मानसूनी बारिश लगभग 31 प्रतिशत कम है और 240 में से 175 तालुकों में वर्षा की कमी दर्ज की गई है। इसी संकट से निपटने के लिए सरकार ने लगभग 27 करोड़ रुपये की क्लाउड सीडिंग परियोजना की योजना बनाई है। ऐसे समय में कर्नाटक के किसानों और आम नागरिकों की यह चिंता स्वाभाविक है कि राज्य की अपनी जल जरूरतों का क्या होगा। दूसरी ओर तमिलनाडु के लिए भी कावेरी जीवनरेखा है। वहां के किसानों की कृषि व्यवस्था और विशेष रूप से सिंचाई का बड़ा हिस्सा नदी के जल पर निर्भर करता है। इसलिए वहां भी पानी की मांग को केवल राजनीतिक आग्रह मान लेना उचित नहीं होगा। यही इस विवाद की जटिलता है—दोनों पक्षों के पास अपनी वास्तविक चिंताएं हैं। लेकिन जब पानी की उपलब्धता सीमित हो, तब समाधान राजनीतिक बयानबाजी में नहीं, वैज्ञानिक जल प्रबंधन में तलाशना होगा।

यह भी ध्यान रखना होगा कि सर्वोच्च न्यायालय ने हाल में तमिलनाडु को जल विवाद को कावेरी जल प्रबंधन प्राधिकरण के समक्ष उठाने को कहा था। मामले की अगली सुनवाई 31 अगस्त को होनी है। इसका अर्थ स्पष्ट है कि संस्थागत व्यवस्था को ही विवाद समाधान का प्रमुख माध्यम बनाना होगा। कावेरी विवाद में सबसे बड़ा नुकसान तब होता है जब पानी का प्रश्न क्षेत्रीय अस्मिता का प्रश्न बन जाता है। ह्यहमारा पानीह्ल और ह्यउनका पानीह्ल जैसी राजनीतिक भाषा लोगों की भावनाओं को तो भड़का सकती है, लेकिन नदी का प्रवाह राजनीतिक सीमाओं को नहीं पहचानता। नदी का जल प्राकृतिक संसाधन है और उसका उपयोग वैज्ञानिक आंकड़ों, उपलब्ध जल, वर्षा, जलाशयों के स्तर और किसानों की वास्तविक जरूरतों को ध्यान में रखकर होना चाहिए।

यहां केंद्र सरकार और संबंधित जल संस्थाओं की जिम्मेदारी भी महत्वपूर्ण हो जाती है। केवल संकट आने पर आदेश जारी करना पर्याप्त नहीं है। दोनों राज्यों के बीच ऐसी दीर्घकालिक व्यवस्था विकसित करनी होगी जिसमें वर्षा की कमी वाले वर्षों के लिए स्पष्ट आपात योजना हो, जलाशयों के स्तर की पारदर्शी जानकारी उपलब्ध हो और पानी के वितरण पर समय रहते वैज्ञानिक निर्णय लिए जाएं।

कर्नाटक को भी अपने जल प्रबंधन पर गंभीरता से विचार करना होगा। बेंगलुरु जैसे तेजी से बढ़ते शहर की पानी की मांग लगातार बढ़ रही है। भूजल का अत्यधिक दोहन, झीलों की स्थिति, वर्षाजल संचयन और जल पुनर्चक्रण जैसे विषयों को राजनीतिक प्राथमिकताओं में ऊपर रखना होगा। केवल बादल बुलाकर बारिश कराने की कोशिश लंबे समय का समाधान नहीं हो सकती। क्लाउड सीडिंग जैसी तकनीक संकट प्रबंधन का एक प्रयोग हो सकती है, लेकिन जल सुरक्षा का आधार नहीं।

तमिलनाडु को भी जल संरक्षण, सूक्ष्म सिंचाई और फसल विविधीकरण की दिशा में अपनी रणनीति मजबूत करनी होगी। यदि दोनों राज्य अपनी-अपनी कृषि प्रणालियों को कम पानी में अधिक उत्पादन के अनुरूप ढालें तो नदी पर दबाव कुछ हद तक कम किया जा सकता है।

कावेरी विवाद हमें एक और महत्वपूर्ण सबक देता है—जल भविष्य का सबसे बड़ा राजनीतिक और सामाजिक प्रश्न बन सकता है। आज विवाद दो राज्यों के बीच है, कल यह शहरों और गांवों के बीच, उद्योग और कृषि के बीच या एक जिले और दूसरे जिले के बीच भी हो सकता है। इसलिए समाधान का रास्ता टकराव नहीं, सहयोग है। कर्नाटक और तमिलनाडु को यह स्वीकार करना होगा कि पानी पर स्थायी जीत किसी एक राज्य की नहीं हो सकती। यदि नदी सूखती है तो दोनों प्रभावित होंगे; यदि जल संरक्षण सफल होता है तो दोनों लाभान्वित होंगे।

आज आवश्यकता ऐसे नेतृत्व की है जो भीड़ को भावनात्मक रूप से उत्तेजित करने के बजाय वैज्ञानिक तथ्यों को सामने रखे। पानी को चुनावी हथियार बनाने के बजाय साझा संसाधन मानने की राजनीतिक परिपक्वता दिखानी होगी। कावेरी का पानी किसी एक राज्य की राजनीतिक संपत्ति नहीं है। यह किसानों, शहरों, पर्यावरण और आने वाली पीढ़ियों की साझा जिम्मेदारी है। इसलिए हर वर्ष विवाद की पुनरावृत्ति के बजाय अब स्थायी जल-संधि, पारदर्शी आंकड़ों और वैज्ञानिक जल प्रबंधन की दिशा में निर्णायक कदम उठाने का समय आ गया है।

कावेरी को संघर्ष की नदी नहीं, सहयोग की नदी बनाना ही दोनों राज्यों और आने वाली पीढ़ियों के हित में होगा।

रक्षाबंधन पर मुनि वीरसागर का संदेश: पहले करें आत्मरक्षा

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 29 अगस्त 2026। बेंगलुरु में चल रहे आत्म-सिलिकॉन वर्षायोग 2026 के अंतर्गत रक्षाबंधन पर्व पर निर्यापक श्रमण मुनि श्री 108 वीरसागरजी महाराज ने विशेष प्रवचन में पर्व के आध्यात्मिक एवं सामाजिक महत्व पर प्रकाश डाला। लगभग ढाई घंटे चले प्रवचन में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने प्रत्यक्ष सहभागिता की, जबकि देश-विदेश के अनेक श्रद्धालुओं ने ऑनलाइन माध्यम से भी प्रवचन सुना।

मुनि श्री वीरसागरजी महाराज ने कहा कि रक्षाबंधन केवल भाई-बहन के बीच रक्षा-सूत्र बांधने का पर्व नहीं है, बल्कि आत्मरक्षा, धर्मरक्षा, संस्कारों की रक्षा और जीवमात्र के प्रति करुणा का संकल्प लेने का अवसर भी है। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में पर्वों का स्वरूप कहीं-कहीं उपहार और बाजारवाद तक सीमित होता जा रहा है। ऐसे में उनके मूल संदेश को समझना आवश्यक है।

आत्मसंयम को बताया वास्तविक आत्मरक्षा

मुनि श्री ने कहा कि बाहरी सुरक्षा के अनेक साधन होने के बावजूद यदि व्यक्ति के भीतर क्रोध, मान, माया और लोभ जैसे विकार सक्रिय हैं तो वास्तविक शांति और सुरक्षा संभव नहीं है। उनके अनुसार आत्मरक्षा का व्यापक अर्थ स्वयं पर नियंत्रण और आत्मसंयम है।

उन्होंने श्रद्धालुओं से आग्रह किया कि रक्षाबंधन के अवसर पर अपने भीतर ऐसा संकल्प विकसित करें, जिससे हिंसा, छल, अधर्म और अनियंत्रित विकारों से बचने की प्रेरणा मिले। उन्होंने कहा कि स्वयं को संयमित करना ही वास्तविक आत्मविजय है और आत्मसंयम से परिवार एवं समाज में भी शांति का वातावरण बनता है।

आचार्य अकंपनाचार्य और 700 मुनिराजों का प्रसंग

रक्षाबंधन की धार्मिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि बताते हुए मुनि श्री ने आचार्य अकंपनाचार्य एवं 700 जैन मुनिराजों से जुड़े प्रसंग का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि यह प्रसंग विपरीत परिस्थितियों में धर्म, अहिंसा और आध्यात्मिक दृढ़ता पर कायम रहने की प्रेरणा देता है।

उन्होंने कहा कि रक्षा का सर्वोच्च स्वरूप हिंसा का जवाब हिंसा से देना नहीं, बल्कि आत्मबल, संयम और धर्मनिष्ठा के माध्यम से परिस्थितियों का सामना करना है।

जीवमात्र की रक्षा का आह्वान

मुनि श्री ने रक्षा के भाव को परिवार तक सीमित न रखते हुए जीवमात्र तक विस्तारित करने का संदेश दिया। उन्होंने अहिंसा, जीवदया, पर्यावरण संरक्षण और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को जीवन का हिस्सा बनाने की प्रेरणा दी।

उन्होंने कहा कि प्रकृति और जीवों के प्रति संवेदनशीलता केवल सामाजिक दायित्व नहीं, बल्कि आध्यात्मिक जिम्मेदारी भी है।

युवाओं और परिवारों को संस्कारों से जोड़ने पर जोर

विशेष प्रवचन में युवाओं और परिवारों को संबोधित करते हुए मुनि श्री ने कहा कि संस्कारित परिवार और जागरूक युवा समाज की महत्वपूर्ण शक्ति हैं। उन्होंने युवाओं से आधुनिक शिक्षा एवं तकनीकी प्रगति के साथ नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को अपनाने का आग्रह किया।

उन्होंने कहा कि संस्कार केवल पुस्तकों से नहीं, बल्कि परिवार के व्यवहार, बड़ों के आचरण और दैनिक जीवन के निर्णयों से विकसित होते हैं। रक्षाबंधन जैसे पर्व परिवारों को आपसी प्रेम, सम्मान और जिम्मेदारियों पर विचार करने का अवसर प्रदान करते हैं।

चातुर्मास में जीवनोपयोगी कार्यक्रम

बेंगलुरु में चल रहा आत्म-सिलिकॉन वर्षायोग 2026 आध्यात्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों का केंद्र बना हुआ है। मुनि श्री वीरसागरजी महाराज एवं साधु समुदाय के सान्निध्य में मंगल प्रवचन के साथ ढ१ु३ू' रैंल्लि और ढंशैल्ल३ल्लॅ रैं' जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से परिवार, युवा और आधुनिक जीवन से जुड़े विषयों पर मार्गदर्शन दिया जा रहा है।

रक्षाबंधन विशेष प्रवचन के दौरान भक्तिमय वातावरण में श्रद्धालुओं ने भजन, सामूहिक प्रार्थना एवं पूजन में सहभागिता की। कार्यक्रम के समापन पर श्रद्धालुओं ने आत्मसंयम, अहिंसा, करुणा और सद्भाव को जीवन में अपनाने की प्रेरणा ली।

मुनि श्री के संदेश का सार रहा कि रक्षा का संकल्प केवल कलाई पर बंधे रक्षा-सूत्र तक सीमित न रहे, बल्कि स्वयं के विकारों से रक्षा, परिवार में प्रेम, समाज में सद्भाव और प्रत्येक जीव के प्रति अहिंसा तक पहुंचे।

समाचार प्रेषक: विपिन कुमार जैन

बांग्लादेश में चीन-पाकिस्तान की बढ़ती सक्रियता, भारत के लिए नई रणनीतिक चुनौती

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बांग्लादेश की विदेश और रक्षा नीति में दिखाई दे रहे बदलाव दक्षिण एशिया के बदलते रणनीतिक समीकरण का महत्वपूर्ण संकेत हैं। ढाका का चीन के साथ आर्थिक एवं रक्षा सहयोग बढ़ना, पाकिस्तान के साथ सैन्य संपर्क मजबूत होना, खत्र17 लड़ाकू विमान को लेकर बातचीत और चीनी तकनीक से वअश निर्माण क्षमता विकसित करने की दिशा में आगे बढ़ना भारत के लिए निश्चित रूप से चिंता का विषय है। हालांकि इन घटनाओं को तत्काल चीन-पाकिस्तान-बांग्लादेश के किसी औपचारिक सैन्य गठजोड़ के रूप में देखना उचित नहीं होगा। वास्तविक चुनौती इससे कहीं अधिक व्यापक है। भारत के पूर्वी पड़ोस में एक महत्वपूर्ण देश अपनी रणनीतिक साझेदारियों का दायरा तेजी से बदल रहा है और ऐसे समय में नई दिल्ली के लिए केवल सीमाओं पर सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करना पर्याप्त नहीं होगा। उसे कूटनीति के मोर्चे पर भी उतनी ही सक्रियता दिखानी होगी। चीन के साथ बढ़ता सामरिक संबंध बांग्लादेश और चीन के संबंध लंबे समय से आर्थिक सहयोग पर आधारित रहे हैं, लेकिन हाल के घटनाक्रमों में रक्षा और रणनीतिक सहयोग का महत्व बढ़ता दिखाई देता है। बुनियादी ढांचे, ऊर्जा, बंदरगाह, संपर्क परियोजनाओं और नदी प्रबंधन के साथ रक्षा क्षेत्र में चीनी तकनीक की बढ़ती मौजूदगी ढाका की रणनीतिक दिशा को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। बांग्लादेश यदि चीनी लड़ाकू विमान और अन्य सैन्य तकनीक हासिल करता है तो इससे उसकी रक्षा क्षमता में वृद्धि होगी। लेकिन भारत को यह भी समझना होगा कि ढाका का उद्देश्य केवल भारत के विरुद्ध सैन्य क्षमता बढ़ाना है, ऐसा निष्कर्ष निकालना जल्दबाजी होगा। बांग्लादेश अपने आर्थिक और सुरक्षा हितों के लिए विभिन्न शक्तियों के साथ संबंधों का विस्तार कर रहा है। JF-17 और ख-10उए पर नजर क्यों जरूरी? पाकिस्तान के खत्र17 ळँ४ल्ला१ को लेकर बांग्लादेश में हुई

चर्चाएं और चीन निर्मित ख-10उए लड़ाकू विमान की संभावित खरीद इस पूरे घटनाक्रम का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। यहां तथ्यात्मक सावधानी आवश्यक है। संभावित खरीद को अंतिम सैन्य सौदा मान लेना उचित नहीं होगा। लेकिन यदि भविष्य में बांग्लादेश खत्र17 अथवा ख-10उए जैसे आधुनिक लड़ाकू विमान अपने बेड़े में शामिल करता है, तो दक्षिण एशिया के वायु शक्ति संतुलन पर उसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। भारत के लिए चिंता का विषय केवल विमान की संख्या नहीं होगी। असली महत्व प्रशिक्षण, रखरखाव, स्पेयर पार्ट्स, हथियार प्रणालियों और दीर्घकालिक तकनीकी निर्भरता का होगा। किसी देश की सैन्य क्षमता केवल हथियार खरीदने से नहीं, बल्कि उस हथियार के साथ विकसित होने वाले पूरे तकनीकी तंत्र से प्रभावित होती है। वअश निर्माण क्षमता को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता बांग्लादेश में चीनी सहयोग से वअश निर्माण और असेंबली क्षमता विकसित करने की दिशा में उठाए गए कदम भी रणनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। ड्रोन आज आधुनिक युद्ध और सीमा निगरानी का महत्वपूर्ण साधन बन चुके हैं। स्थानीय स्तर पर वअश निर्माण की क्षमता विकसित होने से बांग्लादेश भविष्य में केवल आयातक देश नहीं रहेगा, बल्कि अपनी आवश्यकताओं के अनुसार ड्रोन तकनीक विकसित करने की स्थिति में आ सकता है। भारत के पूर्वी और उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों की भौगोलिक संवेदनशीलता को देखते हुए इस बदलाव पर नई दिल्ली की नजर रहना स्वाभाविक है। हालांकि किसी वअश संयंत्र को सीधे भारत के खिलाफ सैन्य तैयारी का प्रमाण मानना उचित नहीं होगा। सिलीगुड़ी कॉरिडोर का सवाल भारत के लिए सिलीगुड़ी कॉरिडोर अत्यंत संवेदनशील रणनीतिक क्षेत्र है। यह भारत के मुख्य भूभाग को पूर्वोत्तर राज्यों से जोड़ने वाला महत्वपूर्ण संपर्क मार्ग है। इसलिए बांग्लादेश, चीन और आसपास के क्षेत्र में होने वाले बड़े सैन्य या रणनीतिक बदलावों का भारतीय सुरक्षा व्यवस्था पर अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ सकता है। लेकिन राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे संवेदनशील विषय पर अनुमान और तथ्य के बीच अंतर बनाए रखना आवश्यक है। फिलहाल ऐसा कोई विश्वसनीय प्रमाण नहीं है कि बांग्लादेश या चीन सिलीगुड़ी कॉरिडोर के खिलाफ किसी सैन्य कार्रवाई की योजना बना रहे हैं। भारत को भय आधारित प्रतिक्रिया के बजाय दीर्घकालिक रणनीतिक तैयारी और निगरानी पर ध्यान देना चाहिए। बंगाल की खाड़ी और तिस्ता का महत्व बांग्लादेश में चीन की बढ़ती आर्थिक मौजूदगी का प्रभाव केवल जमीन तक सीमित नहीं है। बंगाल की खाड़ी में स्थित चटगांव और मोंगला जैसे बंदरगाहों से जुड़ी परियोजनाएं क्षेत्रीय समुद्री रणनीति के लिए भी महत्वपूर्ण हैं।

इसी तरह तिस्ता नदी से जुड़े विकास और जल प्रबंधन के प्रश्न भारत के लिए संवेदनशील हैं। भारत और बांग्लादेश के बीच जल संसाधनों से जुड़े मुद्दों में यदि कोई तीसरी शक्ति महत्वपूर्ण भूमिका हासिल करती है तो उसका आर्थिक प्रभाव भविष्य में रणनीतिक महत्व भी ले सकता है। इसलिए भारत को केवल रक्षा दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि जल, व्यापार, ऊर्जा, संपर्क और समुद्री सुरक्षा को एक साथ जोड़कर बांग्लादेश नीति तैयार करनी होगी। क्या बांग्लादेश चीन के खेमे में जा रहा है?

यह निष्कर्ष भी फिलहाल अतिशयोक्तिपूर्ण होगा कि बांग्लादेश पूरी तरह चीन के खेमे में जा चुका है। ढाका अमेरिका, चीन, भारत, पाकिस्तान और अन्य देशों के साथ अपने संबंधों को अपने राष्ट्रीय हितों के अनुसार संतुलित करने की कोशिश कर रहा है। बांग्लादेश की विदेश नीति को केवल चीन-पाकिस्तान की बढ़ती नजदीकी के चश्मे से देखना वास्तविक तस्वीर को छोटा कर देगा। संभव है कि ढाका अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखने के लिए विभिन्न शक्तियों के बीच संतुलन की नीति अपना रहा हो।

इसीलिए भारत के सामने असली सवाल यह नहीं होना चाहिए कि बांग्लादेश किसके साथ संबंध बढ़ा रहा है, बल्कि यह होना चाहिए कि भारत-बांग्लादेश संबंधों को किस तरह इतना मजबूत बनाया जाए कि भारत ढाका के लिए सबसे विश्वसनीय और दीर्घकालिक साझेदार बना रहे। भारत को बदलनी होगी रणनीति नई दिल्ली को बांग्लादेश के प्रति केवल सुरक्षा-केंद्रित दृष्टिकोण से आगे बढ़ना होगा। व्यापार, ऊर्जा, सड़क-रेल संपर्क, सीमा प्रबंधन, जल संसाधन, पूर्वोत्तर के विकास और समुद्री सहयोग जैसे क्षेत्रों में भारत को अपनी भागीदारी और मजबूत करनी चाहिए। कूटनीति में खाली स्थान कभी खाली नहीं रहता। यदि भारत किसी क्षेत्र में अपनी सक्रियता कम करता है तो दूसरी शक्तियों के लिए वहां प्रभाव बढ़ाने का अवसर पैदा होता है। भारत को बांग्लादेश को किसी विशेष खेमे में जाने से रोकने की कोशिश करने के बजाय उसकी रणनीतिक स्वायत्तता का सम्मान करते हुए अपने संबंधों को मजबूत करना चाहिए। यही अधिक व्यावहारिक और टिकाऊ रणनीति होगी।

बांग्लादेश में चीन का बढ़ता आर्थिक एवं रक्षा प्रभाव, पाकिस्तान के साथ बढ़ता सैन्य संपर्क, खत्र17 पर बातचीत, ख-10उए की संभावित खरीद और वअश निर्माण क्षमता—इन घटनाओं को अलग-अलग देखने के बजाय दक्षिण एशिया में बदलते सामरिक वातावरण के हिस्से के रूप में देखना आवश्यक है। अभी इसे भारत के खिलाफ चीन-पाकिस्तान-बांग्लादेश के किसी सैन्य मोर्चे का रूप देना जल्दबाजी होगी। लेकिन इसे नजरअंदाज करना भी रणनीतिक भूल होगी।

भारत के लिए आगे का रास्ता स्पष्ट है—सीमा पर सतर्कता, समुद्री क्षेत्र में निगरानी, रक्षा तैयारियों में मजबूती और उससे भी अधिक महत्वपूर्ण, ढाका के साथ सक्रिय एवं भरोसेमंद कूटनीतिक संबंध। दक्षिण एशिया में बदलते समीकरणों के बीच भारत की सबसे बड़ी ताकत केवल उसकी सैन्य क्षमता नहीं, बल्कि उसकी आर्थिक, कूटनीतिक और क्षेत्रीय साझेदारी की क्षमता भी है। बांग्लादेश के मामले में यही व्यापक रणनीति भारत के दीर्घकालिक हितों की बेहतर सुरक्षा कर सकती है।

जिनवाणी का बहुमान और पूजा में एकाग्रता ही सच्ची धर्म साधनाः वीर सागर जी

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 29 अगस्त 2026। तुबरहल्ली में आयोजित धार्मिक प्रवचन में निर्यापक श्रमण 108 श्री वीर सागर जी महाराज ने श्रावकों को पूजा-अर्चना, अभिषेक, शांतिधारा, स्वाध्याय और जिनवाणी के प्रति विनय एवं बहुमान रखने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि मंदिर में आने का उद्देश्य केवल सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति नहीं, बल्कि जीवन को सही दिशा देना और अपने विचारों एवं आचरण में सकारात्मक परिवर्तन लाना होना चाहिए।

मुनिश्री ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति सुख, शांति और सफलता चाहता है तथा दुख और परेशानियों से मुक्ति की कामना करता है। लेकिन केवल मंदिर आने से जीवन नहीं बदलता। वास्तविक परिवर्तन तब शुरू होता है, जब व्यक्ति अपने आचरण की कमियों को पहचानकर उन्हें सुधारने का प्रयास करता है।

उन्होंने श्रावकों से आत्मचिंतन करने का आह्वान करते हुए कहा कि धार्मिक क्रिया करते समय यह भी देखना चाहिए कि कहीं हमारी असावधानी से आराधना के साथ आसाधना तो नहीं हो रही।

धर्म कार्यों में संतुलन जरूरी

मुनिश्री ने कहा कि वर्तमान व्यस्त जीवन में लोग नौकरी, व्यवसाय और पारिवारिक जिम्मेदारियों में व्यस्त रहते हैं। धार्मिक आयोजनों में भोजन जैसी व्यवस्थाओं का उद्देश्य लोगों को धर्म से जोड़ना और उन्हें स्वाध्याय तथा साधना

के लिए अवसर उपलब्ध कराना होना चाहिए।

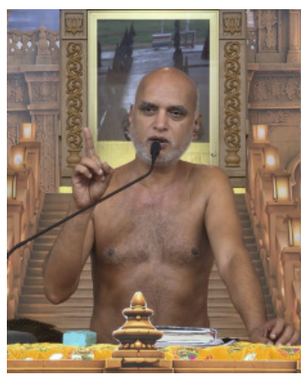

उन्होंने कहा कि भोजन आवश्यक है, लेकिन उसके साथ भजन, स्वाध्याय और धर्म के लिए भी समय निकालना चाहिए। धार्मिक आयोजन का लाभ तभी सार्थक होगा, जब व्यक्ति उसमें उपलब्ध आध्यात्मिक अवसर का भी उपयोग करे। जिनवाणी के प्रति सम्मान का संदेश मुनिश्री ने जिनवाणी के बहुमान को धर्म साधना का महत्वपूर्ण अंग बताया। उन्होंने कहा कि जिनवाणी केवल कागज या पुस्तक नहीं, बल्कि ज्ञान प्राप्ति का माध्यम है। इसलिए उसे अत्यंत सावधानी और सम्मान के साथ रखना चाहिए। उन्होंने धार्मिक पुस्तकों के पन्नों में चावल, लौंग या अन्य वस्तुएं फंसाने, पन्ने मोड़ने तथा चंदन या केसर लगे हाथों से पन्ने पलटने जैसी असावधानियों से बचने की बात कही। उन्होंने कहा कि ऐसी छोटी दिखाई देने वाली लापरवाहियां शास्त्र को नुकसान पहुंचा सकती हैं और धार्मिक दृष्टि से भी उचित नहीं हैं। मुनिश्री ने जिनवाणी को साफ-सुथरा रखने, आवश्यकता पड़ने पर उसकी मरम्मत कराने तथा स्वाध्याय के बाद उसे उचित स्थान पर सम्मानपूर्वक रखने पर जोर दिया। मोबाइल पर स्वाध्याय में भी रखें सावधानी वर्तमान डिजिटल युग का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि मोबाइल पर भक्तामर स्तोत्र, तत्त्वार्थ सूत्र, पूजा, आरती अथवा अन्य धार्मिक पाठ पढ़ते समय भी विनय और एकाग्रता का ध्यान रखना चाहिए। मोबाइल को अनुचित स्थान पर रखकर धार्मिक पाठ करने से बचना चाहिए।

उन्होंने कहा कि मोबाइल पर आने वाले कॉल, संदेश और सूचनाएं स्वाध्याय के दौरान ध्यान भटका सकती हैं। इसलिए संभव हो तो धार्मिक अध्ययन के लिए मुद्रित पुस्तक का उपयोग करना अधिक एकाग्रता वाला विकल्प हो सकता है। पूजा के दौरान एकाग्रता पर जोर

मुनिश्री ने अभिषेक, शांतिधारा और पूजा के दौरान अनावश्यक बातचीत से बचने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि जिस धार्मिक क्रिया के लिए व्यक्ति बैठा है, उस समय उसी में मन लगाना चाहिए। धार्मिक क्रिया में शरीर की उपस्थिति के साथ मन की एकाग्रता भी आवश्यक है। उन्होंने स्पष्ट किया कि बीमारी, वृद्धावस्था या अन्य वास्तविक शारीरिक परिस्थितियों में व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार धार्मिक क्रिया कर सकता है, लेकिन केवल आलस्य या सुविधा के कारण असावधानी उचित नहीं है।

मंदिर में दूसरों की सुविधा का भी रखें ध्यान

मंदिर में पूजा के लिए स्थान रोकने की प्रवृत्ति पर भी मुनिश्री ने सावधान किया। उन्होंने कहा कि व्यक्ति स्वयं उपस्थित होकर पूजा के लिए स्थान लेता है तो यह सामान्य बात है, लेकिन अनुपस्थित रहकर किसी दूसरे से स्थान रोकवाना उचित नहीं। धार्मिक स्थल पर सभी श्रद्धालुओं की सुविधा और पूजा-दर्शन के अधिकार का ध्यान रखना चाहिए।

रक्षाबंधन पर तपस्वी मुनिराजों के स्मरण का आह्वान

रक्षाबंधन पर्व का उल्लेख करते हुए मुनिश्री ने श्रावकों से महातपस्वी मुनिराजों के प्रति श्रद्धा और भक्ति भाव रखने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि गुरु के पास श्रद्धा और भक्ति के भाव से जाना चाहिए। भक्ति का मूल्य वस्तु की कीमत से नहीं, बल्कि उसके पीछे मौजूद श्रद्धा और बहुमान से निर्धारित होता है। उन्होंने तपस्वी मुनिराजों के जीवन से कठिन परिस्थितियों में धैर्य और समता बनाए रखने की प्रेरणा लेने की बात कही। मुनिश्री ने कहा कि जीवन की कठिनाइयों से भागने के बजाय उन्हें धैर्य और समता के साथ सहन करने की क्षमता विकसित करनी चाहिए।

धर्म को समझकर जीवन में उतारें

समापन संदेश में मुनिश्री ने कहा कि धर्म केवल पूजा, दर्शन या किसी धार्मिक क्रिया को पूरा कर लेने तक सीमित नहीं है। धर्म का वास्तविक उद्देश्य व्यक्ति के विचार, व्यवहार और जीवनशैली में सकारात्मक परिवर्तन लाना है। उन्होंने श्रद्धालुओं से अपनी प्रत्येक धार्मिक गतिविधि जागरूकता और विनय के साथ करने का आग्रह किया और कहा कि यह विचार करना आवश्यक है कि कहीं अनजाने में ऐसी कोई क्रिया तो नहीं हो रही, जिससे आराधना के साथ आसाधना भी हो जाए।

प्रवचन का सार यही रहा कि श्रद्धा के साथ विनय, पूजा के साथ एकाग्रता और ज्ञान के साथ जिनवाणी का बहुमान ही धर्म साधना को सार्थक बनाता है।

समाचार प्रेषकः विपिन कुमार जैन

12.50 लाख रुद्राक्षों से बना शिवलिंग, दर्शन को उमड़े भक्त; आज पूणार्हुति

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 29 अगस्त 2026। किंतनहल्ली स्थित लक्ष्मी ओरा फार्म हाउस में सावन के पवित्र मास के अवसर पर 12.50 लाख रुद्राक्षों से निर्मित शिवलिंग श्रद्धालुओं के लिए विशेष आस्था और आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। रुद्राक्षों से निर्मित शिवलिंग के दर्शन, पूजा-अर्चना और रुद्राभिषेक के लिए प्रतिदिन बड़ी संख्या में भक्तजन पहुंच रहे हैं।

पंडित राजेन्द्रकुमार शर्मा एवं ओमप्रकाश शर्मा के पावन सानिध्य में आयोजित धार्मिक अनुष्ठान के दौरान पूरे सावन माह प्रतिदिन रुद्राभिषेक, पूजा-अर्चना, आरती और भजन संध्या का आयोजन किया जा रहा है। भजन संध्या में गोविंददास वैष्णव एंड पार्टी द्वारा प्रतिदिन सुमधुर भजनों की प्रस्तुति दी जा रही है। भजनों की स्वर लहरियों से आयोजन स्थल का वातावरण भक्तिमय बना हुआ है। विशेष रूप से 12.50 लाख रुद्राक्षों से निर्मित शिवलिंग श्रद्धालुओं के आकर्षण का प्रमुख केंद्र बना है। भक्तजन श्रद्धा के साथ शिवलिंग के दर्शन कर भगवान शिव की पूजा-अर्चना एवं आराधना कर रहे हैं।

इस अवसर पर सुरेशकुमार मेहता, गौतमकुमार मेहता, रूपेश सोलंकी, प्रवीण मेवाड़ा, महेंद्रसिंह राजपुरोहित, दीपक शर्मा, रितिक शर्मा, बालमसिंह गुर्जर, ताराचंद सीरवी, विनोद माली, राकेश सीरवी, चंद्रु गुर्जर सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। आज होगी पूणार्हुति

आयोजकों के अनुसार धार्मिक आयोजन की पूणार्हुति 30 अगस्त 2026 को होगी। पूणार्हुति के अवसर पर विशेष पूजा-अर्चना एवं धार्मिक अनुष्ठानों के बाद श्रद्धालुओं को प्रसाद स्वरूप रुद्राक्ष वितरित किए जाएंगे। आयोजन को लेकर भक्तों में विशेष उत्साह बना हुआ है। समाचार प्रेषकः रुपेश सोलंकी

सांसों का धागा टूटने से पहले सार्थक करें मानव जीवन

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 29 अगस्त 2026। श्री जिन कुशल सूरी जैन दादावाड़ी ट्रस्ट, बसवनगुडी के तत्वावधान में चातुमार्सार्थ विराजित प. पू. साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजना श्रीजी म. सा. ने ध्यान शतक ग्रंथ की विवेचना करते हुए मानव जीवन की क्षणभंगुरता और आत्मकल्याण के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि मनुष्य प्रत्येक क्षण मृत्यु की ओर बढ़ रहा है और सांसों की डोर कब टूट जाए, इसका किसी को पता नहीं। साध्वीजी ने कहा कि किसी व्यक्ति में इतनी सामर्थ्य नहीं कि वह किसी अन्य की एक श्वास भी बढ़ा सके। इसलिए मिले हुए मानव जीवन को व्यर्थ गंवाने के बजाय आत्मसाधना और धार्मिक आराधना में लगाना चाहिए। उन्होंने मानव जन्म को अत्यंत दुर्लभ बताते हुए कहा कि यह अवसर बार-बार प्राप्त नहीं होता।

प्रवचन में उन्होंने विभिन्न गतियों का उल्लेख करते हुए मनुष्य गति को विशेष अवसर बताया। उनके अनुसार देव, नरक और तिर्यंच गति के जीवों की संख्या अनंत एवं असंख्यात मानी गई है, जबकि मनुष्य जीवन अत्यंत सीमित और दुर्लभ है। इसी

कारण मानव शरीर को आत्मिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ साधन माना गया है। साध्वीजी ने मीरा बाई के संदर्भ का उल्लेख करते हुए कहा कि मानव देह को देवालय के समान समझना चाहिए। इस देह का उपयोग विषय-विकारों में करने के बजाय परमात्मा की साधना और आत्मकल्याण के लिए किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह शरीर मिट्टी से बना है और अंततः मिट्टी में ही विलीन हो जाएगा, जबकि आत्मा का स्वभाव अजय, अमर और अविनाशी है।

उन्होंने मानव जीवन की तुलना बहुमूल्य रत्न से करते हुए कहा कि जिस प्रकार हीरा, सोना और चांदी सुरक्षित रखने योग्य होते हैं, उसी प्रकार मानव जीवन भी अत्यंत मूल्यवान है। व्यक्ति को अपने शरीर और समय का सदुपयोग करते हुए साधना, आराधना एवं आत्मशुद्धि की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। साध्वीजी ने कहा कि बाहरी शरीर नश्वर है और उसका स्वभाव परिवर्तन तथा विनाश की ओर बढ़ना है, लेकिन आत्मा का मूल स्वरूप शाश्वत है। इसलिए मनुष्य को अपने जीवन का लक्ष्य केवल सांसारिक उपलब्धियों तक सीमित न रखकर आत्मिक उन्नति की दिशा में भी प्रयास करना चाहिए।

प्रवचन में उन्होंने नम्रता और अहंकार के संबंध पर भी प्रकाश डालते हुए कहा कि जहां नम्रता होती है, वहां अहंकार टिक नहीं सकता और जहां अहंकार का वास होता है, वहां नम्रता के लिए स्थान नहीं रहता। उन्होंने श्रद्धालुओं को विनम्रता, आत्मचिंतन और संयम को जीवन में अपनाने का संदेश दिया। इस अवसर पर बाल साध्वी वयाओं ने ह्लदेख तेरी सांसों का धागा टूट रहा इंसान, फिर जाना होगा श्मशानह्व गीतिका की भावपूर्ण प्रस्तुति दी। गीतिका के माध्यम से मानव जीवन की नश्वरता और समय रहते आत्मकल्याण की ओर अग्रसर होने का संदेश दिया गया।

समाचार प्रेषकः ललित डाकलिया

मंदिर की सुविधा भी जिम्मेदारी, अचौर्य पर मुनि वीरसागर का संदेश

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 29 अगस्त 2026। ज्ञानोदय, बेंगलुरु में चल रहे आध्यात्मिक प्रवचन क्रम में निर्यापक श्रमण मुनि श्री 108 वीरसागरजी महाराज ने श्रद्धालुओं को जैन धर्म के अचौर्य सिद्धांत के सूक्ष्म एवं व्यावहारिक पक्षों से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि चोरी का अर्थ केवल किसी वस्तु को चुराना नहीं है, बल्कि दूसरे के संसाधन अथवा सुविधा का बिना उचित प्रतिदान या अनुमति उपयोग करना भी आत्मचिंतन का विषय है।

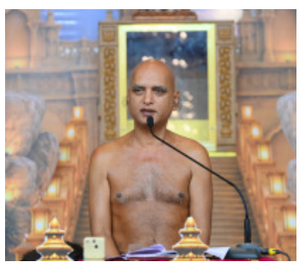

मुनि श्री ने कहा कि धर्म केवल पूजा, अभिषेक, दर्शन और धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं होना चाहिए। व्यक्ति के दैनिक व्यवहार में भी धार्मिक मयार्दा और जिम्मेदारी दिखाई देनी चाहिए। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह जैसे सिद्धांत मनुष्य को जीवन में अनुचित आचरण से बचने की प्रेरणा देते हैं। उन्होंने मंदिर की व्यवस्थाओं का उल्लेख करते हुए श्रद्धालुओं से संसाधनों के प्रति सजग रहने का आग्रह किया। उनके अनुसार मंदिर की बिजली, पानी, वस्त्र और अन्य सुविधाओं के पीछे आर्थिक व्यय एवं

व्यवस्था जुड़ी होती है। ऐसे में व्यक्तिगत आवश्यकता के लिए मंदिर के संसाधनों का उपयोग करते समय व्यक्ति को यह विचार करना चाहिए कि उस सुविधा का खर्च और व्यवस्था किस प्रकार संचालित हो रही है। प्रवचन के दौरान मोबाइल फोन अथवा लैपटॉप चार्ज करने जैसे व्यक्तिगत कार्यों के लिए मंदिर की बिजली के उपयोग का उदाहरण देते हुए उन्होंने श्रद्धालुओं को अपने व्यवहार की समीक्षा करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि सामान्य दिखाई देने वाली छोटी-छोटी आदतों में भी व्यक्ति को अपने अधिकार और दायित्व की सीमा समझनी चाहिए।

मंदिर में उपलब्ध सामूहिक धोती-दुपट्टे के उपयोग को लेकर भी मुनि श्री ने सावधानी बरतने की बात कही। उन्होंने विशेष रूप से अभिषेक जैसे धार्मिक कार्यों के लिए श्रद्धालुओं को अपने घर से स्वच्छ एवं शुद्ध वस्त्र लेकर आने की आदत विकसित करने का आग्रह किया। मुनि श्री वीरसागरजी महाराज ने धार्मिक कार्यों के लिए की जाने वाली बोली और आर्थिक संकल्पों पर भी श्रद्धालुओं का ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने कहा कि धार्मिक भावना से किसी राशि के भुगतान का संकल्प करने के बाद उसे समय पर पूरा करना भी व्यक्ति की जिम्मेदारी है। संकल्प केवल घोषणा तक सीमित न रहकर उसकी पूर्ति तक पहुंचना चाहिए।

उन्होंने श्रद्धालुओं से अपने पूर्व व्यवहार का आत्मावलोकन करने का आग्रह करते हुए कहा कि यदि अनजाने में मंदिर के संसाधनों या सुविधाओं का अनुचित उपयोग हुआ हो, तो व्यक्ति को अपनी भूल स्वीकार कर जहां संभव हो उचित प्रतिपूर्ति करनी चाहिए तथा भविष्य में अधिक सजग रहने का संकल्प लेना चाहिए। मुनि श्री ने कहा कि मंदिर में आने वाला व्यक्ति केवल सुविधाओं का उपयोगकर्ता नहीं, बल्कि उस धार्मिक व्यवस्था का सहभागी भी है। इसलिए मंदिर की संपत्ति एवं संसाधनों के प्रति सम्मान, अपने दायित्वों का निर्वहन और धार्मिक संकल्पों की पूर्ति भी धर्माचरण का हिस्सा है। प्रवचन का मुख्य संदेश यही रहा कि धार्मिक जीवन केवल बड़े अनुष्ठानों से नहीं, बल्कि दैनिक जीवन की छोटी-छोटी आदतों और व्यवहार में भी प्रतिबिंबित होता है। श्रद्धालुओं को मंदिर की सुविधाओं का उपयोग मयार्दा, कृतज्ञता और जिम्मेदारी के साथ करने की प्रेरणा दी गई। समाचार प्रेषकः विपिन कुमार जैन

हरिप्रसाद का पलटवारः नागेंद्र का इस्तीफा BJP की जीत नहीं

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 29 अगस्त 2026। कर्नाटक प्रदेश कांग्रेस कमेटी (ड्ढठ्ठ) के अध्यक्ष बी.के. हरिप्रसाद ने वाल्मीकि निगम मामले को लेकर भाजपा पर तीखा हमला बोला है। ड्ढठ्ठ कार्यालय में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में उन्होंने कहा कि तत्कालीन मंत्री बी. नागेंद्र ने सार्वजनिक जीवन में नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए इस्तीफा दिया है। उन्होंने इसे भाजपा या विपक्षी नेताओं की जीत मानने से इनकार करते हुए आरोप लगाया कि यह दलित नेताओं के खिलाफ राजनीतिक साजिश का परिणाम है। ह्यइखढ इस्तीफे को विकेट गिरने की तरह न देखेह्व हरिप्रसाद ने भाजपा नेताओं द्वारा नागेंद्र के इस्तीफे पर कथित जश्न को लेकर कहा कि राजनीति को क्रिकेट मैच की तरह नहीं देखा जाना चाहिए। उन्होंने भाजपा नेताओं से सवाल किया कि भ्रष्टाचार के आरोपों को लेकर उनकी पार्टी के कितने नेताओं के खिलाफ आरोपपत्र दाखिल हुए हैं, कितने जेल गए और कितने मामलों में जांच या जमानत की स्थिति रही है। उन्होंने कहा कि आरोप लगाना जांच एजेंसियों का काम है, जबकि किसी व्यक्ति को दोषी ठहराने का अधिकार न्यायालय के पास है। उनके अनुसार राजनीतिक दल या उनके कार्यालय किसी व्यक्ति के दोषी होने का अंतिम निर्णय नहीं कर सकते। रक्ळ जांच का दिया हवाला KPCC अध्यक्ष ने कहा कि वाल्मीकि निगम में कथित अनियमितताओं की जानकारी सामने आने के बाद राज्य सरकार ने रक्ळ जांच के आदेश दिए थे। उनके अनुसार जांच के आधार पर अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की गई और बाद में प्रवर्तन निदेशालय (एऊ) ने भी जांच की। हरिप्रसाद ने दावा किया कि नागेंद्र ने जांच में सहयोग किया और उन्हें बिना पर्याप्त आधार के निशाना बनाया गया। उन्होंने कहा कि यदि जांच एजेंसियों के पास ठोस साक्ष्य हैं तो उन्हें न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया जाना चाहिए। जमानत आदेश का किया उल्लेख

हरिप्रसाद ने नागेंद्र की जमानत से जुड़े न्यायालयीन आदेश का हवाला देते हुए कहा कि विशेष अदालत के जमानत आदेश में कथित तौर पर यह उल्लेख है कि नागेंद्र के खिलाफ ?94.73 करोड़ लेने या इस्तेमाल करने का प्रत्यक्ष प्रमाण सामने नहीं आया था। उन्होंने यह भी दावा किया कि नागेंद्र रक्ळ की चार्जशीट में आरोपी नहीं थे। उन्होंने कहा कि जांच उइक्, एऊ या किसी अन्य एजेंसी से हो, लेकिन जांच के दौरान सामने आए आरोपों को ही अंतिम सजा के रूप में प्रस्तुत करने की राजनीति स्वीकार नहीं की जा सकती। बेल्लारी की राजनीति का भी उठाया मुद्दा

भ्रष्टाचार के मुद्दे पर भाजपा को घेरते हुए हरिप्रसाद ने बेल्लारी की पुरानी राजनीति और अवैध खनन से जुड़े मामलों का उल्लेख किया। उन्होंने रेड्डी बंधुओं तथा तत्कालीन बेल्लारी की राजनीति को लेकर भाजपा नेताओं से जवाब मांगा। उन्होंने भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बी.वाई. विजयेंद्र के उस कथित बयान का भी जिक्र किया, जिसमें नागेंद्र को ह्यछोटी मछलीह्व कहा गया था। हरिप्रसाद ने चुनौती देते हुए कहा कि यदि भाजपा के पास कथित ह्यबड़ी मछलीह्व से जुड़े प्रमाण हैं तो उन्हें सार्वजनिक किया जाना चाहिए।

केंद्रीय एजेंसियों के इस्तेमाल का आरोप

हरिप्रसाद ने केंद्र सरकार और जांच एजेंसियों पर विपक्षी नेताओं को निशाना बनाने का आरोप लगाया। उन्होंने दावा किया कि वर्ष 2014 के बाद केंद्रीय जांच एजेंसियों की कार्रवाई का सामना कर रहे कई विपक्षी नेता भाजपा या भाजपा नेतृत्व वाले गठबंधन में शामिल हुए और उनमें से कई मामलों में बाद में राहत मिली। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के भ्रष्टाचार के खिलाफ पुराने राजनीतिक नारे का उल्लेख करते हुए भाजपा पर दोहरे मापदंड अपनाने का आरोप लगाया। नागेंद्र के समर्थन में कांग्रेस हरिप्रसाद ने बी. नागेंद्र को चार बार के विधायक और अनुसूचित जनजाति समुदाय के प्रमुख नेताओं में से एक बताया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी नागेंद्र को राजनीतिक रूप से अकेला नहीं छोड़ेगी और उन्हें उचित सम्मान दिया जाएगा।

उन्होंने राज्य में सूखे की स्थिति पर भी भाजपा को घेरते हुए कहा कि विपक्ष को इस मुद्दे पर विधानसभा में चर्चा करनी चाहिए थी। उनके अनुसार ऐसी चर्चा से केंद्र से राज्य के लिए आवश्यक सहायता और हिस्से की मांग को मजबूती मिल सकती थी। हरिप्रसाद ने राज्यपाल और केंद्र सरकार पर भी दबाव की राजनीति के आरोप लगाए। उन्होंने कहा कि भाजपा का कोई भी नेता ह्यसत्य हरिश्चंद्रह्व नहीं है और केवल आरोप लगने के आधार पर राजनीतिक नैतिकता का दावा करना उचित नहीं है। कांग्रेस नेता के इन आरोपों पर भाजपा की ओर से प्रतिक्रिया आने के बाद राजनीतिक विवाद और तेज होने की संभावना है। फिलहाल, वाल्मीकि निगम प्रकरण को लेकर सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच आरोप-प्रत्यारोप का दौर जारी है।

नागेंद्र को चुनौती, 2028 में जहां लड़ेंगे, मैं भी लड़ूंगाः श्रीरामुलु

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 29 अगस्त 2026। भाजपा के पूर्व मंत्री बी. श्रीरामुलु ने मंत्री पद से इस्तीफा दे चुके बी. नागेंद्र को आगामी विधानसभा चुनाव में उनके खिलाफ चुनाव लड़ने की चुनौती दी है। उन्होंने कहा कि 2028 में नागेंद्र जिस विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ेंगे, वह भी वहीं से चुनाव मैदान में उतरेंगे। श्रीरामुलु ने यह बात भाजपा के राज्य कार्यालय जगन्नाथ भवन में पार्टी के प्रस्तावित मार्च का लोगो जारी करते हुए कही।

नौ विधानसभा क्षेत्रों से गुजरेगा भाजपा का मार्च

श्रीरामुलु के अनुसार भाजपा का मार्च 1 सितंबर को लिंगसागुर से शुरू होगा और 10 सितंबर को बेल्लारी में समाप्त होगा। मार्च की शुरूआत लिंगसागुर में एक बड़े सम्मेलन से होगी। इसमें केंद्रीय मंत्री प्रल्हाद जोशी, एच.डी. कुमारस्वामी, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बी.वाई. विजयेंद्र, विपक्ष के नेता आर. अशोक, चलवाड़ी नारायणस्वामी सहित अन्य नेताओं के शामिल होने की बात कही गई है। उन्होंने बताया कि मार्च मास्की, सिंधनूर, कराटागी, गंगावती, काम्पली, संदूर और बेल्लारी ग्रामीण विधानसभा क्षेत्रों से होकर बेल्लारी शहर पहुंचेगा। वाल्मीकि निगम मामले को लेकर कांग्रेस पर निशाना श्रीरामुलु ने वाल्मीकि अनुसूचित जनजाति विकास निगम से जुड़े कथित अनियमितता मामले को लेकर कांग्रेस सरकार पर तीखा हमला बोला। उन्होंने दावा किया कि इस मामले में मंत्री नागेंद्र को इस्तीफा देना पड़ा और विपक्ष ने इस मुद्दे को विधानसभा तथा विधान परिषद में प्रमुखता से उठाया।

उन्होंने भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बी.वाई. विजयेंद्र सहित विपक्षी नेताओं और विधान परिषद सदस्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि उन्होंने नागेंद्र के इस्तीफे की मांग को लेकर सदन में लगातार आवाज उठाई। श्रीरामुलु ने कहा कि भाजपा ने यह लड़ाई राजनीतिक स्वार्थ के लिए नहीं, बल्कि अनुसूचित जनजाति समुदाय के लोगों के हित और भविष्य के लिए लड़ी। मुख्यमंत्री शिवकुमार के फैसले पर भी टिप्पणी श्रीरामुलु ने कहा कि मुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार चाहते तो नागेंद्र का बचाव कर सकते थे, लेकिन उन्होंने इस्तीफे का रास्ता स्वीकार किया। नागेंद्र के इस्तीफे के समय भावुक होने का जिक्र करते हुए श्रीरामुलु ने कहा कि इसके लिए भाजपा को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता।

उन्होंने आरोप लगाया कि कथित घोटाले के दौरान बड़ी राशि का दुरुपयोग हुआ। हालांकि, इन आरोपों पर संबंधित पक्षों की प्रतिक्रिया को भी महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए। 2028 के चुनाव को लेकर सीधी चुनौती श्रीरामुलु ने नागेंद्र के चुनाव लड़ने की चुनौती का जवाब देते हुए कहा कि विधानसभा चुनाव में जनता ही अंतिम फैसला करेगी। उन्होंने नागेंद्र से अपनी कथित गलतियों को स्वीकार करने की बात भी कही। उन्होंने कांग्रेस पर दलित और आदिवासी समुदायों के हितों की अनदेखी करने तथा एससीपी/टीएसपी निधियों के कथित दुरुपयोग का आरोप लगाया। श्रीरामुलु ने कांग्रेस पर राजनीतिक रूप से तीखे आरोप लगाते हुए दावा किया कि आने वाले समय में जनता इसका जवाब देगी। कांग्रेस सरकार पर तीखे राजनीतिक आरोप श्रीरामुलु ने कांग्रेस नेतृत्व पर निशाना साधते हुए कहा कि नागेंद्र को मंत्री पद से हटाया जाना सरकार की राजनीतिक जिम्मेदारी का हिस्सा है। उन्होंने कांग्रेस नेतृत्व और राज्य सरकार पर कई गंभीर आरोप लगाए तथा कहा कि आगामी चुनाव में भाजपा जनता के बीच इन मुद्दों को लेकर जाएगी। उन्होंने दावा किया कि 2028 के चुनाव में नागेंद्र जहां से भी चुनाव लड़ेंगे, वह उनके खिलाफ चुनाव लड़ने के लिए तैयार हैं। साथ ही उन्होंने राज्य में सरकार को बर्खास्त कर नए सिरे से जनादेश लेने की मांग भी उठाई। श्रीरामुलु के बयान पर कांग्रेस और बी. नागेंद्र की ओर से प्रतिक्रिया सामने आने के बाद राजनीतिक तस्वीर और स्पष्ट हो सकती है। फिलहाल, उनके बयान को आगामी विधानसभा चुनाव से पहले भाजपा की ओर से तेज किए जा रहे राजनीतिक अभियान के संकेत के रूप में देखा जा रहा है।

नेपाल आपदा पीड़ितों को जैन समाज ने दी श्रद्धांजलि

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 29 अगस्त 2026। श्री जिन कुशल सूरी जैन दादावाड़ी ट्रस्ट, बसवनगुडी के तत्वावधान में नेपाल में आई बाढ़ और हिमस्खलन में मारे गए लोगों की आत्मा की शांति के लिए श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। प. पू. साध्वी जी श्री प्रियश्रद्धांजना श्री जी म. सा. के सान्निध्य में उपस्थित श्रद्धालुओं ने दो मिनट का मौन रखकर तीन नवकार मंत्र का जाप किया और दिवंगतों के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस अवसर पर साध्वी जी ने ह्यध्यान शतकह्व ग्रंथ की विवेचना करते हुए एकाग्रता और आत्मचिंतन के महत्व पर प्रकाश

डाला। उन्होंने कहा कि जब तक व्यक्ति एकाग्र होकर ध्यान में लीन नहीं होता, तब तक वह अपने अंतिम लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि जिस प्रकार गोताखोर समुद्र की गहराई में उतरने के बाद ही बहुमूल्य मोती प्राप्त कर सकता है, उसी प्रकार आत्मिक उपलब्धि के लिए व्यक्ति को अपने भीतर गहराई से उतरना आवश्यक है।

साध्वी जी ने मनुष्य जीवन की महत्ता समझाते हुए कहा कि श्रेष्ठता और उत्तमता की पहचान गहराई में जाने से होती है। बहुमूल्य वस्तु प्राप्त करने के लिए जिस प्रकार परिश्रम करना पड़ता है, उसी प्रकार आत्मध्यान में लीन होने और आत्मकल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए भी निरंतर साधना आवश्यक है। उन्होंने मनुष्य जीवन की तुलना रेत, पत्थर, नदी-वृक्ष और हीरे से करते हुए कहा कि मनुष्य अपने कर्मों और आचरण से अपने जीवन को सार्थक बना सकता है। पत्थर यदि योग्य कारीगर के हाथ में पहुंचे तो परमात्मा की प्रतिमा का स्वरूप ले सकता है, जबकि उसका दुरुपयोग किसी जीव को नुकसान पहुंचाने के लिए भी हो सकता है। इसी प्रकार मनुष्य अपने जीवन का उपयोग परोपकार, आत्मकल्याण और समाजहित में कर सकता है।

उन्होंने कहा कि नदी और वृक्ष की तरह जीवन दूसरों के लिए उपयोगी होना चाहिए, जबकि हीरे की तरह ऐसा आचरण होना चाहिए जिससे स्वयं के साथ दूसरों का भी मूल्य और कल्याण बढ़े। उन्होंने दुर्ध्यान और नकारात्मक प्रवृत्तियों से बचने का संदेश देते हुए कहा कि गलत विचार और आचरण व्यक्ति के साथ-साथ दूसरों के लिए भी विनाशकारी साबित हो सकते हैं। कार्यक्रम के माध्यम से नेपाल आपदा में जान गंवाने वाले लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए आत्मचिंतन, करुणा, परोपकार और सदाचार का संदेश दिया गया। समाचार प्रेषकः ललित डाकलिया

क्रांतिकारी विचारों का हर युग में हुआ विरोध : विमलसागरसूरीश्वर

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

हैदराबाद, 29 अगस्त 2026। आचार्य विमलसागरसूरीश्वर ने कहा कि समाज में जब भी कोई क्रांतिकारी और परिवर्तनकारी विचार सामने आता है, तो उसका विरोध होना कोई नई बात नहीं है। इतिहास में अनेक महापुरुषों और उनके विचारों को भी तत्कालीन समाज के विरोध का सामना करना पड़ा है। उन्होंने कहा कि स्वार्थ, अहंकार, संकीर्णता और पूर्वाग्रह से प्रभावित सोच व्यक्ति को सत्य और वास्तविकता को स्वीकार करने से रोकती है। स्थानीय महावीरस्वामी जैन श्वेतांबर संघ के तत्वावधान में कल्याणकारी तपागच्छ वर्षावास समिति द्वारा आयोजित धर्मसभा में गुरुवार को आचार्यश्री ने यह विचार व्यक्त किए। एग्जिबिशन ग्राउंड स्थित जगद्गुरु हीरसूरि वाटिका में आयोजित धर्मसभा में दो हजार से अधिक श्रद्धालुओं ने प्रवचन का लाभ लिया।

आचार्य विमलसागरसूरीश्वर ने कहा कि कई बार व्यक्ति सत्य, तथ्य और समाजहित से अधिक अपने व्यक्तिगत हित, प्रतिष्ठा, पंथ या संप्रदाय की मान्यताओं को महत्व देने लगता है। ऐसी संकीर्ण मानसिकता में व्यक्ति अपने निर्धारित विचारों के दायरे से बाहर निकलकर निष्पक्ष रूप से विचार नहीं कर पाता। उन्होंने कहा कि क्रांतिकारी एवं परिवर्तनकारी विचार तत्कालीन परिस्थितियों में भले ही सहज स्वीकार न किए जाएं, लेकिन समय के साथ उनकी उपयोगिता और प्रभाव सामने आ सकते हैं। इसलिए किसी नए विचार या व्यक्ति का बिना तथ्य जाने विरोध करने के बजाय उसके उद्देश्य और परिणामों को समझने का प्रयास किया जाना चाहिए।

आचार्यश्री ने कहा कि धर्म का उद्देश्य समाज को जोड़ना और व्यक्ति को सत्य, संयम एवं सदाचार की दिशा में ले जाना है। यदि धर्म के नाम पर संकीर्णता बढ़े और समाज में विभाजन पैदा हो, तो उस पर आत्ममंथन आवश्यक है। उन्होंने कहा कि झूठ से दूर हटकर, स्वार्थ वृत्तियों को कम करके और वास्तविकताओं को स्वीकार करते हुए सोच में परिवर्तन लाया जाए, तभी समाज सत्य एवं सकारात्मक परिवर्तनकारी विचारों से लाभान्वित हो सकता है। आचार्यश्री ने ऐतिहासिक संदर्भ देते हुए कहा कि भगवान महावीर स्वामी के समय भी अनेक विरोधी विचारधाराएं और संगठन मौजूद थे। इसके बावजूद भगवान महावीर के अहिंसा, अनेकांत और आत्मकल्याण के संदेश ने व्यापक प्रभाव छोड़ा। उन्होंने श्रद्धालुओं से किसी भी विषय पर पूर्वाग्रह के बजाय विवेकपूर्ण दृष्टि अपनाने का आह्वान किया।

तप-साधना के संकल्पों का हुआ सम्मान

वर्षावास समिति के मुख्य संयोजक मोहनलाल बागरेचा ने बताया कि धर्मसभा के दौरान गीतगान के साथ विमलादेवी शंकरलाल ओस्तवाल की ओर से दूसरे तपोत्सव के लिए मेहंदी वितरित की गई। वर्षावास के दौरान अनेक श्रद्धालुओं ने विभिन्न तप-साधनाओं के संकल्प लेकर श्रमणवृंद की अभिवंदना की। भंसाली, चंद्रा देवडाधोका, नितिन बोकारिया, शीतल बागरेचा और सुरेखा बालड़ ने 30 उपवास; महेंद्र ढेलडिया मेहता, पूजा बागरेचा, सीमा वाणीगोता, स्वीटी फोलामुथा और योगेश मुथा ने 16 उपवास; रमेश रांका, रीटा जोटा और विक्रम श्रीश्रीमाल ने 15 उपवास तथा चंदना सिंघी ने 17 उपवास की साधना के संकल्प लिए। धर्मसभा में श्रद्धालुओं ने आचार्यश्री के मार्गदर्शन को आत्मचिंतन, सामाजिक सद्भाव और सकारात्मक परिवर्तन की दृष्टि से महत्वपूर्ण बताया। समाचार प्रेषकः जबरसिंह राजपुरोहित, होसपेट

कुत्ते के मुंह पर टेप, लाखों की चोरी से गांव में हड़कंप

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

औरंगाबाद, 29 अगस्त 2026। बिहार के औरंगाबाद जिले के मुफस्सिल थाना क्षेत्र के भरवार गांव में तेज बारिश के बीच एक घर में चोरी का मामला सामने आया है। पीड़ित परिवार के अनुसार चोर घर से करीब साढ़े तीन से चार लाख रुपये के सोने-चांदी के आभूषण और 40 हजार रुपये नकद लेकर फरार हो गए। वारदात के दौरान घर में मौजूद पालतू कुत्ते के मुंह पर टेप चिपकाए जाने की बात भी सामने आई है।

पीड़ित आलोक सिंह के अनुसार शुक्रवार रात वह अपनी पत्नी के साथ घर में सो रहे थे, जबकि परिवार के अन्य सदस्य रिश्तेदार के यहां गए हुए थे। रात करीब 12 बजे के बाद तेज बारिश शुरू हो गई। इसी दौरान घर में चल रहे कूलर के शोर का फायदा उठाकर चोर कथित रूप से घर में दाखिल हुए।

कुत्ते को शांत कर तीन कमरों में की तलाशी

परिवार के मुताबिक, चोरों ने सबसे पहले आंगन में बंधे पालतू कुत्ते को काबू किया और उसके मुंह पर टेप लगा दिया। इसके बाद घर के तीन कमरों के ताले तोड़कर अंदर रखी दो अलमारियों और दो लोहे के ट्रंक को खंगाला गया। पीड़ित के अनुसार, चोर सोने-चांदी के आभूषण और घर में रखी 40 हजार रुपये की नकदी लेकर फरार हो गए। सुबह परिजनों की नींद खुलने पर कमरों के टूटे ताले और बिखरा सामान देखकर चोरी की जानकारी हुई।

गांव में दहशत और आक्रोश गांव के बीचों-बीच हुई चोरी की घटना की जानकारी फैलते ही ग्रामीण पीड़ित के घर पहुंच गए। स्थानीय लोगों ने इलाके में रात्रि गश्त बढ़ाने की मांग की है। ग्रामीणों का कहना है कि बारिश के मौसम में सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत किए जाने की आवश्यकता है। प्राथमिकी दर्ज, जांच में जुटी पुलिस घटना की सूचना मिलने पर मुफस्सिल थानाध्यक्ष अशोक कुमार पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे और घटनास्थल का निरीक्षण किया। पुलिस ने पीड़ित परिवार से घटना की जानकारी लेने के साथ आसपास के संभावित सुरागों की जांच शुरू कर दी है।

थानाध्यक्ष के अनुसार, आलोक सिंह के बयान के आधार पर प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है। पुलिस आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाल रही है और चोरों की पहचान एवं गिरफ्तारी के लिए आगे की कार्रवाई कर रही है। फिलहाल चोरी में शामिल आरोपियों की पहचान और बरामदगी को लेकर पुलिस जांच जारी है। घटना के संबंध में अंतिम स्थिति जांच पूरी होने के बाद ही स्पष्ट हो सकेगी।

होसपेट से अरसीकेरे रेलसेवा शुरू, पांच जिलों को मिली नई रेल कड़ी

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

होसपेट, 29 अगस्त 2026। होसपेट से अरसीकेरे के बीच नई रेलसेवा शुरू होने से विजयनगर समेत कर्नाटक के पांच जिलों के यात्रियों को बेहतर रेल संपर्क की सुविधा मिलने की उम्मीद है। रेलसेवा के शुभारंभ के अवसर पर विजयनगर रेलवे उपयोगकर्ता संघ के पदाधिकारियों और स्थानीय लोगों ने रेलवे इंजन की पूजा-अर्चना कर खुशी जताई तथा ट्रेन के चालक को मिठाई खिलाकर स्वागत किया।

नई रेलसेवा विजयनगर, दावणगेरे, चित्रदुर्ग, चिकमगलूर और हासन जिलों को आपस में जोड़ने वाली महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में देखी जा रही है। ट्रेन कुल 29 स्टेशनों पर ठहराव करेगी, जिससे मार्ग में आने वाले कस्बों और ग्रामीण क्षेत्रों के

यात्रियों को भी आवागमन की सुविधा मिलेगी। प्राप्त जानकारी के अनुसार, गाड़ी संख्या 07343/44 होसपेट से सुबह 6 बजे रवाना होकर अरसीकेरे पहुंचेगी। वापसी में अरसीकेरे से दोपहर 2:30 बजे ट्रेन के रवाना होने का समय निर्धारित किया गया है। यह रेलसेवा फिलहाल सोमवार से शुक्रवार तक सप्ताह में पांच दिन संचालित होगी।

व्यवसाय, शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र को मिलेगा लाभ

नई रेलसेवा से व्यापारियों, विद्यार्थियों और इलाज के लिए दूसरे शहरों में जाने वाले मरीजों को विशेष सुविधा मिलने की उम्मीद है। इसके अलावा पर्यटकों के आवागमन को बढ़ावा मिलने के साथ संबंधित क्षेत्रों में व्यापारिक और आर्थिक गतिविधियों को भी गति मिल सकती है। अरसीकेरे रेलवे स्टेशन महत्वपूर्ण जंक्शन होने के कारण यहां से बेंगलुरु, मैसूरु, हासन और मंगलुरु की ओर जाने वाली रेल सेवाओं से जुड़ने का अवसर मिलेगा। इससे विजयनगर और आसपास के क्षेत्रों के यात्रियों के लिए आगे की रेल यात्रा भी अधिक सुविधाजनक हो सकती है।

विशेष रूप से मालनाड क्षेत्र और विजयनगर जिले के बीच आवागमन आसान होने से सामाजिक, शैक्षणिक और व्यावसायिक संपर्क को मजबूती मिलने की संभावना है। लोगों ने उत्साह के साथ किया स्वागत

रेलसेवा के शुभारंभ पर मरमनहल्ली, हंपीपटना, हगरीबोम्मनहल्ली, कोट्टूर सहित आसपास के क्षेत्रों से पहुंचे लोगों ने उत्साहपूर्वक ट्रेन का स्वागत किया। स्थानीय लोगों और रेलवे उपयोगकर्ता संघ के पदाधिकारियों ने इसे क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि बताया। विजयनगर रेलवे उपयोगकर्ता संघ के अध्यक्ष वाई. यमुनेश और सचिव महेश कुडुतिनी ने रेल राज्य मंत्री तथा रेलवे उपभोक्ता सदस्य बाबूलाल जैन सहित संबंधित लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया।

रेलवे उपयोगकर्ता संघ ने इस रेलसेवा को सप्ताह के सभी दिनों में संचालित करने तथा भविष्य में इसे मैसूरु या मंगलुरु तक विस्तार देने की मांग भी रखी है। संघ का कहना है कि नियमित और विस्तारित रेलसेवा से यात्रियों के साथ-साथ क्षेत्र के व्यापार और पर्यटन को भी अतिरिक्त लाभ मिल सकता है। इस अवसर पर यू. अंजन्यालु, दीपक उल्लि, कमलेश, नजीर साहब, टिप्पेस्वामी, देवरेड्डी, वरुण रमाली, अरविंद जोली टेलर, बसवराज सहित अनेक लोग उपस्थित रहे। समाचार प्रेषकः जबरसिंह राजपुरोहित, होसपेट

33 उपवास की तपस्या, पूजा नाहर का हुआ अभिनंदन

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 29 अगस्त 2026। अलसूर स्थित सुब्रह्मण्यम स्वामी कल्याण मंडप में शुक्रवार को श्रीमती पूजा नाहर की 33 उपवास की दीर्घ तपस्या के उपलक्ष्य में धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। तपस्या महोत्सव का आयोजन आत्मकल्याण, आत्मशुद्धि एवं कर्मनिर्जरा की भावना के साथ किया गया।

श्रीमती पूजा नाहर ने गुरुदेव के प्रति श्रद्धा एवं समर्पण भाव रखते हुए 33 उपवास की दीर्घ तपस्या आराधित की। इस अवसर पर उपस्थित श्रद्धालुओं ने तपस्विनी की तपस्या

के प्रति अनुमोदना व्यक्त की और उनके आत्मिक कल्याण की मंगलकामना की। कार्यक्रम में आचार्य भगवंत एवं साधु-साध्वियों के पावन सान्निध्य में प्रवचन एवं प्रत्याख्यान का आयोजन रखा गया। धार्मिक विधि-विधान के बाद मंगलगीत प्रस्तुत किए गए, जिससे कार्यक्रम का वातावरण भक्तिमय बना रहा। परिवार की ओर से सभी साधर्मिक बंधुओं से इस पावन अवसर पर उपस्थित होकर तपस्विनी की तपस्या की अनुमोदना करने का आग्रह किया गया। कार्यक्रम में श्रद्धालुओं ने सहभागिता कर तपस्या के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की। समाचार प्रेषकः किशोर जैन दफतरी

100 गांवों के विकास को 225 करोड़ की सौगात

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

संवाददाताः अशोक कुमार सिंह

बालाघाट, 29 अगस्त 2026। मध्य प्रदेश के बालाघाट जिले के पूर्व नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में विकास और जनविश्वास को मजबूत करने की दिशा में सरकार ने बड़ी पहल की है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जन-विश्वास अभियान के तहत ग्राम बोंदारी पहुंचकर जनजातीय परिवारों से संवाद किया। इस दौरान जिले के 100 गांवों के समग्र विकास के लिए करीब ?225 करोड़ के विकास कार्यों की घोषणा की गई। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि पूर्व नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं को मजबूत करने के साथ पशुपालन को बढ़ावा दिया जाए। आवास, पोषण, चिकित्सा और शिक्षा जैसी आवश्यक सुविधाओं का लाभ पात्र परिवारों तक प्रभावी ढंग से पहुंचाने पर भी जोर दिया गया। बैगा समाज के विकास पर जोर

मुख्यमंत्री ने बैगा समाज के सर्वांगीण विकास को प्राथमिकता देने की बात कही। उन्होंने शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर बनाने तथा विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ पात्र परिवारों तक पहुंचाने के निर्देश दिए। साथ ही पारंपरिक कला, संस्कृति और स्थानीय उत्पादों को बाजार से जोड़ने की दिशा में प्रयास करने की बात कही।

सड़क, बिजली और रोजगार पर फोकस

प्रस्तावित विकास कार्यों के तहत सड़क, बिजली, पेयजल, शिक्षा, स्वास्थ्य और आवास जैसी बुनियादी सुविधाओं को मजबूत करने पर जोर रहेगा। इसके साथ ही युवाओं को कौशल विकास और रोजगार के नए अवसरों से जोड़कर आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में काम करने की बात कही गई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि नक्सलवाद से मुक्त हुए क्षेत्रों में विकास का लाभ समाज की अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक पहुंचना सरकार की प्राथमिकता है। सरकार की इस पहल को बालाघाट में सुरक्षित वातावरण के साथ विकास की गति तेज करने के प्रयास के रूप में देखा जा रहा है।

कब्बनपेठ में रक्षाबंधन की धूम, भाइयों की कलाई पर सजा रक्षा सूत्र

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 29 अगस्त 2026। रक्षाबंधन

के पावन पर्व पर बेंगलुरु के कब्बनपेठ क्षेत्र में भाई-बहन के प्रेम, स्नेह और आपसी विश्वास का पर्व उत्साह एवं श्रद्धा के साथ मनाया गया। इस अवसर पर बहनों ने भाइयों की कलाई पर रक्षा सूत्र बांधकर उनके सुखी, स्वस्थ एवं मंगलमय जीवन की कामना की।

पारंपरिक रीति-रिवाजों के बीच बहनों ने भाइयों का तिलक किया, आरती उतारी और रक्षा सूत्र बांधा। भाइयों ने भी बहनों के प्रति स्नेह व्यक्त करते हुए उनकी रक्षा एवं सम्मान का संकल्प लिया और उपहार भेंट किए। रक्षाबंधन के अवसर पर क्षेत्र में पारिवारिक एवं सामाजिक सौहार्द का वातावरण देखने को मिला। लोगों ने एक-दूसरे को पर्व की शुभकामनाएं देते हुए भाई-बहन के रिश्ते की मजबूती और आपसी प्रेम का संदेश दिया।

कब्बनपेठ में आयोजित कार्यक्रम ने पारंपरिक भारतीय संस्कृति और पारिवारिक मूल्यों की झलक प्रस्तुत की। उपस्थित लोगों ने रक्षाबंधन को केवल रक्षा सूत्र बांधने तक सीमित न रखते हुए प्रेम, विश्वास और जिम्मेदारी का पर्व बताया। समाचार प्रेषकः दलपतसिंह भायल

आत्मा को भूल जाना ही प्रमाद : साध्वी प्रियश्रद्धांजना

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 29 अगस्त 2026। श्री जिन कुशल सूरी जैन दादावाड़ी ट्रस्ट, बसवनगुडी के तत्वावधान में चातुर्मासार्थ विराजित प. पू. साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजना श्रीजी म. सा. ने ध्यान शतक ग्रंथ की विवेचना करते हुए आत्मचिंतन, जागरूकता और आध्यात्मिक साधना के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति अपनी आत्मा और आत्मध्यान को भूल जाता है, वही प्रमाद की स्थिति में पहुंच जाता है। साध्वीजी ने कहा कि जैन दर्शन के अनुसार आत्मा अनादि काल से संसार में परिभ्रमण करती आ रही है। राग, द्वेष और कषाय की प्रवृत्तियों को इसका प्रमुख कारण बताते हुए उन्होंने कहा कि मनुष्य जीवन प्राप्त होने के बाद भी यदि व्यक्ति आत्मकल्याण और परमात्मा की आज्ञा के अनुरूप जीवन जीने का प्रयास नहीं करता, तो संसार के बंधनों से मुक्त होना कठिन बना रहता है। उन्होंने श्रद्धालुओं को प्रमाद से बचने का संदेश देते हुए कहा कि आत्मध्यान से विमुख करने वाली प्रवृत्तियां व्यक्ति को आध्यात्मिक लक्ष्य से दूर कर सकती हैं। इसलिए मानव जीवन का उपयोग आत्मचिंतन, संयम और साधना के लिए किया जाना चाहिए।

निद्रा के विभिन्न स्वरूपों की व्याख्या प्रवचन में साध्वीजी ने निद्रा और दुर्ध्यान के विषय पर भी विस्तार से चर्चा की। उन्होंने जैन दर्शन में वर्णित निद्रा के पांच प्रकारों का उल्लेख करते हुए कहा कि निद्रा की अवस्थाओं का व्यक्ति की जागरूकता और आध्यात्मिक साधना पर प्रभाव पड़ता है। उन्होंने सुखपूर्वक आने वाली सामान्य निद्रा से लेकर ऐसी गहरी निद्रा तक के स्वरूपों की व्याख्या की, जिसमें बार-बार जगाने पर भी व्यक्ति आसानी से जाग नहीं पाता। उन्होंने खड़े-खड़े अथवा चलते समय आने वाली नींद और अत्यधिक जड़ता वाली निद्रा के संदर्भ भी बताए। साध्वीजी ने कहा कि अत्यधिक निद्रा व्यक्ति की जागरूकता को प्रभावित कर सकती है तथा उसे आत्मचिंतन से दूर ले जा सकती है। साध्वीजी ने भगवान महावीर और भगवान आदिनाथ से जुड़े जैन परंपरा के प्रसंगों का उल्लेख करते हुए साधना में जागरूकता और संयम के महत्व को समझाया। उन्होंने कहा कि साधु-साध्वियों के लिए शास्त्रों में निद्रा एवं विश्राम को लेकर विशेष अनुशासन निर्धारित किए गए हैं। वहीं श्रावक-श्राविकाओं को भी दिनचर्या में नियमितता रखते हुए ब्रह्ममुहूर्त में जागरण और धार्मिक साधना के लिए समय निकालने की प्रेरणा दी गई। उन्होंने कहा कि अत्यधिक निद्रा एवं असावधानी के कारण व्यक्ति का मन आर्त और रौद्र ध्यान जैसी अवस्थाओं की ओर अधिक प्रवृत्त हो सकता है। इसलिए जीवन में सजगता, संयम और सकारात्मक चिंतन आवश्यक है। रक्षाबंधन के जैन संदर्भ पर प्रकाश प्रवचन के दौरान आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा के अवसर पर मनाए जाने वाले रक्षाबंधन पर्व, नारियली पूर्णिमा तथा जैन परंपरा में वर्णित नमुचि और महापद्म के दृष्टांतों का उल्लेख किया गया। साध्वीजी ने जैन धर्म में रक्षाबंधन पर्व के धार्मिक एवं आध्यात्मिक महत्व को श्रद्धालुओं के समक्ष रखा। उन्होंने कहा कि पर्व केवल परंपरा निभाने का अवसर नहीं, बल्कि आत्मचिंतन और सद्भाव को मजबूत करने का माध्यम भी बन सकते हैं। श्रद्धालुओं को अपने जीवन में जागरूकता, संयम और आत्मकल्याण की भावना विकसित करने का संदेश दिया गया। समाचार प्रेषकः ललित डाकलिया

नागेंद्र का इस्तीफा, कर्नाटक में सियासी घमासान

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 29 अगस्त 2026। कर्नाटक की राजनीति में शुक्रवार को उस समय नया मोड़ आ गया, जब योजना एवं सांख्यिकी मंत्री बी. नागेंद्र ने वाल्मीकि अनुसूचित जनजाति विकास निगम से जुड़े कथित वित्तीय अनियमितता मामले के बीच मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया। नागेंद्र ने कहा कि उन्होंने कांग्रेस और सरकार को किसी भी तरह की असहज स्थिति से बचाने के लिए स्वेच्छा से पद छोड़ने का निर्णय लिया है। वह दोबारा मंत्री बनने के करीब 25 दिन बाद ही पद से हटे हैं। मुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार ने नागेंद्र से मुलाकात के बाद कहा कि मंत्री आरोपों से बेहद आहत हैं और स्वयं को निर्दोष बता रहे हैं। शिवकुमार के अनुसार, उन्होंने मामले से संबंधित रिपोर्टों और उपलब्ध जानकारी को देखा है तथा उनके अनुसार नागेंद्र का कथित वित्तीय अनियमितताओं से संबंध नहीं है। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि इस्तीफे पर अंतिम निर्णय पार्टी आलाकमान से चर्चा के बाद लिया जाएगा।

दूसरी बार छोड़ा मंत्री पद बी. नागेंद्र के लिए यह इस्तीफा इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि वाल्मीकि निगम विवाद के संदर्भ में वह दूसरी बार मंत्रिपद से हटे हैं। वर्ष 2024 में भी उन्होंने तत्कालीन मुख्यमंत्री

सिद्धारमैया के मंत्रिमंडल से इस्तीफा दिया था। बाद में जांच के दौरान उन्हें गिरफ्तार किया गया था और वह जमानत पर बाहर आए। अगस्त 2026 में मुख्यमंत्री पद पर डी.के. शिवकुमार के आने के बाद नागेंद्र को मंत्रिमंडल में फिर शामिल किया गया था। इस बार नागेंद्र ने आरोपों में अपनी भूमिका से इनकार करते हुए कहा कि उन्हें राजनीतिक रूप से निशाना बनाया जा रहा है। उन्होंने अपने इस्तीफे को सरकार और पार्टी को असहज स्थिति से बचाने के लिए उठाया गया कदम बताया।

भाजपा ने बताया सरकार का ह्यपहला विकेट

नागेंद्र के इस्तीफे के बाद विपक्षी भाजपा ने इसे अपनी राजनीतिक मुहिम की सफलता बताया। विधानसभा में विपक्ष के नेता आर. अशोक ने इसे मुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार के नेतृत्व वाली सरकार का ह्यपहला विकेटह्व बताया और कहा कि पार्टी का आंदोलन केवल मंत्री के इस्तीफे तक सीमित नहीं है। भाजपा कथित वित्तीय अनियमितताओं की पूरी जवाबदेही तय करने की मांग कर रही है।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बी.वाई. विजयेंद्र ने भी सरकार पर हमला बोलते हुए दावा किया कि नागेंद्र इस पूरे मामले में केवल ह्यछोटी मछलीह्व हैं और असली जिम्मेदार लोगों का अभी सामने आना बाकी है। हालांकि ये भाजपा के राजनीतिक आरोप हैं और मामले में अंतिम जिम्मेदारी जांच तथा न्यायिक प्रक्रिया के आधार पर ही तय होगी। मामला क्या है?

विवाद कर्नाटक महर्षि वाल्मीकि अनुसूचित जनजाति विकास निगम में कथित धन हस्तांतरण और वित्तीय अनियमितताओं से जुड़ा है। जांच एजेंसियों की कार्रवाई के बाद यह मामला कर्नाटक की राजनीति में बड़ा मुद्दा बन गया। रिपोर्टों के अनुसार निगम से जुड़े करीब 89.63 करोड़ रुपये के कथित लेन-देन ने विवाद को और गंभीर बनाया। नागेंद्र ने लगातार अपने ऊपर लगाए गए आरोपों से इनकार किया है। इसलिए इस पूरे मामले में आरोप, जांच और दोषसिद्धि—तीनों को अलग-अलग रखना जरूरी है। किसी व्यक्ति को केवल आरोपों या राजनीतिक बयानों के आधार पर दोषी मानना पत्रकारिता की दृष्टि से उचित नहीं होगा।

सरकार के सामने राजनीतिक चुनौती

नागेंद्र के इस्तीफे से फिलहाल कांग्रेस सरकार पर विपक्षी दबाव बढ़ना तय माना जा रहा है। भाजपा पहले से ही इस मुद्दे को लेकर सरकार के खिलाफ आंदोलन कर रही है और इस्तीफे के बाद उसने जांच तथा जवाबदेही की मांग और तेज कर दी है।

दूसरी ओर मुख्यमंत्री शिवकुमार का नागेंद्र के बचाव में सामने आना बताता है कि सरकार इस मामले को राजनीतिक दबाव के बजाय कानूनी और जांच प्रक्रिया के आधार पर देखने का संदेश देना चाहती है। अब निगाह इस बात पर रहेगी कि नागेंद्र का इस्तीफा सरकार और कांग्रेस के लिए राजनीतिक दबाव कम करता है या विपक्ष को इस मुद्दे को और व्यापक बनाने का अवसर देता है। साथ ही जांच एजेंसियों की आगे की कार्रवाई और अदालतों में मामले की स्थिति भी इस विवाद की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण होगी।

गौ सेवा का संदेश, भजनों से गूंजा श्री कृष्णा गौ सेवा आश्रम

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 29 अगस्त 2026। मातेश्वरी भक्त मंडल के तत्वावधान में होसुर बंडे स्थित श्री कृष्णा गौ सेवा आश्रम में ह्यएक शाम गौ माता के नामह्व कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया गया। कार्यक्रम में श्रद्धालुओं ने भजन-संगीत का आनंद लेने के साथ गौ सेवा और गौ सम्मान का संकल्प लिया।

कार्यक्रम में गायक ओम मुडेल ने भजनों की प्रस्तुति दी। उनकी प्रस्तुति पर उपस्थित

श्रद्धालु देर रात तक भक्ति संगीत में आनंदित होते रहे। वातावरण में भक्ति और गौ सेवा के प्रति समर्पण का भाव दिखाई दिया। संतों ने बताया गौ सेवा का महत्व गौशाला प्रमुख संत पुष्कर दास सहित उपस्थित संत-महात्माओं ने अपने प्रवचनों में गाय को भारतीय आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक परंपरा का महत्वपूर्ण आधार बताया। उन्होंने गोभक्तों से गौ सम्मान आह्वान अभियान से जुड़कर गौ सेवा के प्रति जागरूकता बढ़ाने का आह्वान किया। संतों ने कहा कि गौ सेवा केवल धार्मिक भावना तक सीमित न रहकर समाज में सेवा, करुणा और जीवदया की भावना को मजबूत करने का माध्यम भी बन सकती है। गौ सेवा हम सबका कर्तव्य

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत ने गाय की उपयोगिता और गौ सेवा के महत्व पर विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि गौ सेवा समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है और प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुसार इसमें योगदान देना चाहिए। कार्यक्रम के आयोजकों की ओर से मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत, समाजसेवी प्रकाश चौहान सहित सहयोग करने वाले दानदाताओं का सम्मान किया गया। आयोजन में श्रद्धालुओं और गौभक्तों की सहभागिता रही। समाचार प्रेषकः उपेन्द्र कुमार

Printed Published & Owner by Dhanna Ram Choudhary And Printed at MNS Printers Pvt. Ltd., No.345/4, Bhattarahalli, Old Madras Road, Bengaluru Karnataka-560049. And Published at "Maruthi"Plaza"", No. 10/1, 1st Cross Road, 3rd Floor , Oil Mill Road, Arvind Nagar , Maruthi Seva Nagar Post, Kammanahalli, Bengaluru Urban, Karnataka -560033, Editor Dhanna Ram Choudhary , For Editorial 91641 17755, Advertisement 88676 89130 , RNI No. KNHIN/2026/A5540. E-Mail: news@bhaarataarth.com, Website: bhaarataarth.com, Established: 2026